हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com
युगाब्द 5117 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2072 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
विश्व हिन्दू परिषद की केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल बैठक कुम्भ मेला क्षेत्र, त्र्यम्बकेश्वर नासिक में सम्पन्न	5
ज्ञानप्राप्तिविचार:	10
धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रशासन का हस्तक्षेप दु:खद और भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला	11
सत्संग सप्ताह कार्यक्रम	11
रामचरित मानस का डिजिटल संस्करण जारी	12
मन्दिर तोड़ने पर जनाक्रोश	12
दोहरे आतंक का खतरा ...	13
'ॐ' के उच्चारण पर भी छिड़ सकता है विवाद : मोदी	13
गुरुकुल प्रभात आश्रम में राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठी संपन्न	14
जनसंख्या असंतुलन देश के अस्तित्व और पहचान के लिए खतरा	15
गौरक्षा विभाग- उत्तर क्षेत्र की बैठक सम्पन्न	16
शहीद बाबा बंदा सिंह बहादुर जी शहीदी दिवस	18
वृक्षारोपण पर हरियाणा सरकार का सही नजरिया	19
भारत माता मंदिर में मनाई तुलसी जयंती	20
प्राकृतिक चिकित्सा में गाय के गोबर का विभिन्न उपयोग	21
22 सितम्बर जयंती श्रीचंद बाबाजी महाराज	23
मंदिर और सत्संग धर्म के आधार	25
तीन आतंकी संगठनों की पनाहगार तमिलनाडु?	26

नवमोऽध्यायः

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ ८॥

सम्पूर्ण प्राणि समुदाय प्रकृति के वश में होने से परतन्त्र है। कल्पों के आदि में अपनी प्रकृति को अपने पूर्ण नियन्त्रण में रखकर ऐसे प्राणि समुदाय को मैं बारंबार रचता हूँ।

प्राणी जब कल्प के अन्त में-विलीन होते महाप्रलय में प्रकृति अंश हो लीन प्रकृति में-लीन हो चेतन अंश ब्रह्म में कर्मों के संस्कार और गुण-रहते सभी साथ इस कारण प्राणी मुक्त नहीं वे होते-यदपि लीन ईश्वर में होते

दोहा-स्वीकार कर निज प्रकृति, योनि अनेक प्रकार।
उन जीवों की करूँ मैं, रचना बारम्बार।।
लीन क्रिया के पूर्व ही, जोते त्रिगुण विरक्त।
महाप्रलय के पूर्व ही, हो जाते वे मुक्त।।

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९॥

हे धनंजय अर्जुन! उन सृष्टि-रचना आदि सभी कर्मों में मेरी स्थिति उदासीन और अनासक्त के समान रहती है, इसी कारण वे कर्म मुझको नहीं बाँधते।

इस प्रकार रचना क्रम सारा-होता अर्जुन मेरे द्वारा किन्तु न उद्भव में प्रसन्न मैं-लीन क्रिया में भी न खिन्न मैं मुझसे पृथक् न जग की सत्ता-मेरा ही स्वरूप सब रहता कर्मों में आसक्त नहीं मैं-उदासीन की भाँति अत: मैं ये सब कम कर्म-फल जो भी-मैं सम्बन्धित नहीं कहीं भी अनासक्त ही करता सबको-अत: कर्म बंधन नहिं मुझको

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्
दिल्ली-110035, दूर : 011-27192504

भाद्रपद शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०७२
१४ सितम्बर से २८ सितम्बर २०१५ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — शरद ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
सोमवार	प्रतिपदा	उत्तरा फाल्गुनी	२६	14	
मंगलवार	द्वितीया	हस्त	३०	15	
बुधवार	तृतीया	चित्रा	३१	16	हरियाली तीज, वराह जयंती
गुरुवार	चतुर्थी	स्वाति	१ आश्विन	17	कलंक चतुर्थी, संक्रान्ति
शुक्रवार	पञ्चमी	विशाखा	२	18	ऋषि पञ्चमी
शनिवार	षष्ठी	अनुराधा	३	19	हल षष्ठी
रविवार	सप्तमी	ज्येष्ठा	४	20	संतान सप्तमी व्रत
सोमवार	अष्टमी	ज्येष्ठा	५	21	दधीचि जयंती, श्री राधाष्टमी
मंगलवार	नवमी	मूल	६	22	श्री चन्द्र नवमी
बुधवार	दशमी	पूर्वाषाढ़/उत्तराषाढ़	७	23	
गुरुवार	एकादशी	श्रवण	८	24	पद्मा एकादशी व्रत
शुक्रवार	द्वादशी	धनिष्ठा	९	25	पंचक प्रारंभ 15, 36 से, प्रदोष व्रत, वामन जयंती
शनिवार	त्रयोदशी	शतभिषा	१०	26	
रविवार	चतुर्दशी	पूर्वा भाद्रपद	११	27	अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत
सोमवार	पूर्णिमा	उत्तराभाद्रपद	१२	28	स्नानादि पूर्णिमा, पितृपक्ष प्रारंभ प्रतिपदा का श्राद्ध, ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

न ते संगोऽस्ति केनापि किं शुद्धस्त्यक्तुमिच्छसि ।
संघात विलयं कुर्वन्नेवमेव लयं व्रज ॥१॥ ५

अष्टावक्र जी महाराज जनक जी को संबोधित करते हुए कहते हैं कि- "तुम्हारा किसी के साथ कोई संबंध नहीं है, तुम शुद्ध हो, फिर किसका त्याग करना चाहते हो? इस प्रकार देहाभिमान का त्याग करते हुए ही मोक्ष को प्राप्त करो।"

उदेति भवतो विश्वं वारिधेव बुद्बुदः ।
इति ज्ञात्वैकमात्मानमेवमेव लयं व्रज ॥२॥ ५

तुमसे ही संसार उत्पन्न होता है, जिस प्रकार समुद्र से बुलबुला होता है। इस प्रकार आत्मा को एक जान कर ऐसे ही तुम मोक्ष को प्राप्त हो।

विश्व हिन्दू परिषद की केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल बैठक कुम्भ मेला क्षेत्र, त्र्यम्बकेश्वर नासिक में सम्पन्न

दिनांक 5 सितम्बर, 2015 को जूना पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज की अध्यक्षता में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक नासिक कुंभ क्षेत्र त्र्यम्बकेश्वर में श्रीपंच दशनाम जूना अखाडा में सम्पन्न हुई जिसमें निरंजनी पीठाधीश्वर पूज्य श्री पुण्यानंद जी महाराज, ज.गु. रामानुजाचार्य श्री कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य, ज.गु. शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वती जी, मलूकपीठाधीश्वर पू. राजेन्द्र दास जी महाराज देवाचार्य, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष पू. नरेन्द्रानंद गिरि, महामंत्री हरिगिरि जी, जूना अखाड़ा के सचिव महंत नारायण गिरि जी, उदासीन बड़ा अखाड़ा के महंत दुर्गादास जी, महंत संतोष मुनि जी, महंत अग्रदास जी, आवाहन अखाडा के महंत सागरानंद जी, महानिर्वाणी अखाडा के महंत शिवनारायण पुरी जी महाराज, मणिराम छावनी के महंत कमलनयन दास जी, डॉ. रामेश्वर दास श्रीवैष्णव, महंत सुरेशदास जी, महंत भगवान दास जी आदि संतों ने **मम दीक्षा हिन्दू रक्षा,** मम मंत्र समानता के संदेश के साथ अपने विचार व्यक्त किए।

बैठक में प्रथम प्रस्ताव जनगणना की रिपोर्ट की भयावहता के प्रति संतों ने एक प्रस्ताव के माध्यम से अपनी भावना को व्यक्त करते हुए कहा कि आज इस हिन्दू समाज की जनसंख्या 80 प्रतिशत से भी नीचे हो गई है जो बड़ी चिंता का विषय है। यह चिंता केवल हिन्दू की नहीं अपितु देश की एकता और अखण्डता के प्रति आगामी संकट की आहट है। यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि इस देश के सभी वर्ग जनसंख्या नियंत्रण में सब प्रकार का सहयोग कर रहे हैं परन्तु मुस्लिम समाज इसमें सहयोग करने के बजाए जनसंख्या वृद्धि को एक अभियान के रूप में ले रहा है जो चिंतनीय है। घुसपैठ, धर्मान्तरण, बहुपत्नी विवाह, अधिक प्रजनन और आक्रामक नीति के आधार पर मुस्लिम समाज की जनसंख्या में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि हिन्दू की जनसंख्या वृद्धि 7.50 प्रतिशत है। इसलिए सभी राज्य सरकारों को राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनानी चाहिए।

केन्द्रीय मार्गदर्शक ने गोरक्षा के लिए केन्द्रीय कानून तत्काल बनाने पर बल देते हुए कहा कि जब तक इस देश में गो का रक्त इस देवभूमि पर एक भी बूंद गिरेगा तब तक कोई भी अनुष्ठान सफल नहीं होगा तथा सुख-शांति समाज में स्थापित नहीं हो सकती। आज देश में विकास की बहुत बड़ी चर्चा हो रही है जबकि गौवंश भारत के अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए गौवंश की रक्षा इस देश की राष्ट्रीय आवश्यकता है। भारत सरकार को तत्काल गोवंश पर केन्द्रीय कानून बनाकर भारतीय गोवंश आधारित जैविक खेती को प्रोत्साहन देना चाहिए। साथ ही गोवंश तस्करी रोकने की सुदृढ़ व्यवस्था बनानी चाहिए।

सामाजिक समरसता के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए संतों ने कहा कि आत्मवत् सर्वभूतेषु ही हमारा दर्शन है। इस दर्शन को ज.गु. रामानंदाचार्य ने "जाति पाति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई", संत तुलसीदास ने "सियराम मय सब जग जानी, करहुं प्रणाम जोरि जुग पानि" कहकर पोषित किया है।

इसीलिए संतों ने हिन्दू समाज का आह्वान करते हुए कहा कि सिद्धान्त और व्यवहार में एकरूपता निर्माण करते हुए समाज में व्याप्त थोपी गई सामाजिक छुआछूत, ऊंच नीच और छोटा-बड़ा के घृणित व्यवहार को अपने मन-मस्तिष्क से निकाल बाहर करें और समवेत् स्वर में घोषणा करें कि **हिन्दवः सहोदराः सर्वे न हिन्दू पतितो भवेतः,** हिन्दू हम सब एक, कोई हिन्दू अछूत नहीं है।

बैठक का संचालन श्री जीवेश्वर मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्रीपंच दशनाम जूना अखाड़ा के सचिव महंत नारायणगिरि जी ने कहा कि हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि आप सभी पूज्य संत चरण हमारे अखाड़े में पधारे हैं। आज यहां पर जो निर्णय लिए गए वह अपने में बहुत ऐतिहासिक हैं और समाज में बड़े परिवर्तन के सूचक हैं। हम सब संतों को आज यहां लिए गए निर्णय को तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए। आप सबका आभार व्यक्त करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। शांति मंत्र के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जारीकर्ता- **राजेन्द्र सिंह पंकज**
केन्द्रीय मंत्री-विश्व हिन्दू परिषद

प्रस्ताव : जनगणना

नासिक कुंभ के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का यह सुविचारित मत है कि जनगणना केवल आंकड़े नहीं, उस समूह की पहचान होती है। भारत की जनसंख्या का तेजी से बढ़ता असंतुलन न केवल उसकी पहचान समाप्त कर रहा है अपितु भारत के अस्तित्व के लिए भी खतरा बनता जा रहा है। भारत की पहचान सर्वपंथ, समभाव व वसुधैव कुटुम्बकम् आदि सद्गुणों से है जो यहां के बहुसंख्यक हिन्दू समाज के कारण निर्माण हुई है। हिन्दुओं की घटती जनसंख्या इस पहचान के लिए खतरा बनेगी। 2011 के जनसंख्या आंकड़ों का विश्लेषण करने पर एक खतरनाक संकेत मिल रहा है। देश में हिन्दुओं की जनसंख्या पहली बार 8. प्रतिशत से कम हुई है। जिन जिलों या राज्यों में हिन्दुओं की संख्या कम हुई है उनकी स्थिति को देखकर भविष्य के संकेत आसानी से समझे जा सकते हैं। पूरी कश्मीर घाटी, बिहार व बंगाल के तीन तथा असम के नौ मुस्लिम बाहुल्य जिलों में साम्प्रदायिक सद्भाव समाप्त हो चुका है। गैरमुस्लिम वहां अपने अस्तित्व को नहीं बचा पा रहे हैं। राज्य तथा केन्द्र सरकार भी इन स्थानों पर पंगु दिखाई देती है। शायद इसी कारण कुछ मुस्लिम नेता भविष्य की ओर संकेत करते हुए चेतावनी देते हैं कि जब हम 20 प्रतिशत हो जायेंगे तो हिन्दुओं को उनकी शर्तों पर रहना होगा।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल जनसंख्या के बढ़ते असंतुलन के लिए विदेशी घुसपैठ, धर्मान्तरण, बहुपत्नी विवाह, अतिप्रजनन और मुस्लिम समाज की आक्रामक नीति को जनसंख्या वृद्धि करने का प्रमुख कारण मानता है। मुस्लिम समाज का एक बड़ा वर्ग जनसंख्या वृद्धि को एक मिशन मानता है। कुछ कट्टरपंथी दारूल इस्लाम का सपना दिखाकर इस मार्ग पर चलने के लिए भोले-भाले मुसलमानों को विवश करते हैं।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का मानना है कि इस खतरे के दुष्परिणाम हिन्दू समाज व भारत को तो झेलने ही पड़ेंगे किन्तु मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं रहेगा। आबादी बढ़ाने के इस अभियान के कारण उन्हें पिछड़ा रहने के लिए अभिशप्त रहना ही पड़ेगा, जिसकी उन्हें आत्मघात के समान कोई चिंता नहीं है। इसलिए मुस्लिम समाज से हमारी अपील है कि इस अभियान के अपने ऊपर होने वाले दुष्परिणामों को ठीक करने हेतु आंतरिक सुधार की प्रक्रिया चालू करे। अरब देशों सहित दुनिया के सभी सभ्य समाज परिवार नियोजन को स्वीकार करते हैं तो भारत का मुस्लिम समाज क्यों नहीं? मुस्लिमों को यह बात भलीभांति समझना चाहिए कि देश के सामने अपने अविवेक से निर्माण की गई कोई भी कठिनाई उनके स्वयं के लिए भी घातक सिद्ध होगी।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की भारत की सभी राज्यों एवं केन्द्र सरकार से अपील है कि वे सम्पूर्ण देश में सभी समाजों के लिए समान राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का निर्माण करें। जिसके लिए न्यायपालिका भी कई बार कह चुकी है। बांग्लादेश व बर्मा से हुई घुसपैठ न केवल जनसंख्या असंतुलन बल्कि देश पर खतरे का भी कारण बन चुकी है। उनको रोकना, पहचानना व वापस भेजना सभी सरकारों का संवैधानिक व नैतिक दायित्व है। धर्मान्तरण के विषय में भी भारत का संविधान व न्यायपालिका बहुत स्पष्ट हैं।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल हिन्दू समाज का आह्वान करता है कि वह अपने तथा देश पर मंडराते हुए इस खतरे की भयावहता को समझे तथा संगठित होकर इसके निराकरण हेतु सक्रिय होकर सकारात्मक प्रयत्न करें।

प्रस्तावक : डॉ. रामेश्वर दास श्रीवैष्णव
अनुमोदक : 1. ज.गु.शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद जी महाराज, सुमेरूपीठ, काशी

2. साध्वी प्रज्ञा भारती, महामंत्री
साध्वी शक्ति परिषद, भोपाल

प्रस्ताव - गौरक्षा

भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि गोवंश पर आधारित है। हिन्दू समाज गाय को माँ रूप में मानता है और इसीलिए हमारे ऋषियों ने **गावो विश्वस्य मातरः** कहकर गाय के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। गाय के रोम-रोम में 33 करोड़ देवताओं का वास है और गाय के गोबर में तो लक्ष्मी जी का वास है। पंचगव्य जहाँ पर हमारे धार्मिक अनुष्ठान का अभिन्न अंग है वहीं पर पंचगव्य चिकित्सा का भी एक वैज्ञानिक शास्त्र है और इसी के वशीभूत होकर हिन्दू समाज जीवनपर्यन्त गाय के साथ रचा-बसा है। गोवंश हमारी आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ सदियों से रहा है। गोवंश आधारित कृषि से ही किसान एवं देश समृद्ध होगा।

देश की स्वाधीनता आंदोलन का जन्म भी गोरक्षा के गर्भ में से ही हुआ। स्वाधीनता पूर्व से लेकर आज तक गोवंश की रक्षा के लिए अनेक गोभक्तों ने संघर्ष ही नहीं किया अपितु बलिदान भी दिए हैं। सरकारों की ओर से केवल आश्वासन ही मिलते रहे हैं जबकि हर स्तर पर गोवंश की महत्ता को सब लोगों ने स्वीकार किया है, परन्तु जहाँ केन्द्रीय कानून बनाने की बात आती है तो राजनीतिज्ञ अपना लाभ-हानि का गुणा-भाग करने लगते हैं।

आज वैज्ञानिक आधार पर यह भी सिद्ध हो चुका है कि भारतीय गोवंश के गोमूत्र और गोबर में औषधीय गुण हैं जो मानव के स्वास्थ्य में सहायक होने के साथ-साथ कृषि के लिए हानिकारक कीटाणुओं को नियंत्रित करने की भी क्षमता रखते हैं। गोमूत्र और गोबर पर्यावरण का संरक्षण व प्रदूषण नष्ट करने में भी सहायक है। अतः भारत के समग्र विकास और देश में श्वेतक्रांति लाने के लिए भारतीय नस्ल के गोवंश का संरक्षण और संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है।

विश्व हिन्दू परिषद का केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल केन्द्र सहित सभी राज्य सरकारों से अनुरोध करता है कि:-

- भारतीय नस्ल के गोवंशपालन को बढ़ावा दिया जाए।
- भारतीय नस्ल के गोवंश पर समग्र वैज्ञानिक शोध किया जाए। जैसे-नस्ल सुधार, दुग्धवृद्धि, पंचगव्य का औषधीय प्रयोग आदि।
- गोवंश आधारित जैविक खेती को प्रोत्साहन मिले और सरकार इसके लिए अनुदान दे।
- गोवंश मांस निर्यात पूर्णतः प्रतिबंधित हो।
- गोवंश की तस्करी को संज्ञेय अपराध घोषित किया जाए।
- खाद्य उत्पादन के नाम पर कत्लखानों के लाइसेंस निरस्त और सभी प्रकार का मिलने वाला शासकीय अनुदान समाप्त किया जाए।
- नस्ल सुधार के बहाने भारतीय नस्ल को विदेशी नस्ल के साथ संकरित न किया जाए।
- देश की सभी कारागारों व सैनिक फार्मों में गोपालन अनिवार्य हो तथा इन गोशालाओं को गोसंवर्धन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाए।
- सरकार द्वारा गोवंश की सुरक्षा के लिए "गो अभयारण्य" बनाए जाएँ।
- राज्य सरकारों द्वारा प्रत्येक जिले में चारा-भूसा भण्डारण केन्द्र स्थापित किए जाएँ जिसका अकाल के समय व बेसहारा पशुओं के लिए उपयोग किया जा सके।
- भारतीय मनीषियों द्वारा गोवंश के संबंध में व्यक्त किए गए विचारों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- केन्द्र व सभी राज्यों में गोवंश संरक्षण-संवर्धन मंत्रलय स्थापित हो ताकि गोवंश पर समग्र चिंतन हो सके।
- भारतीय गोवंश की नस्लों को संरक्षित किया जाए।
- गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित किया जाए।
- भारत सरकार गोवंश हत्या पर प्रतिबंध का कानून तत्काल बनाए।

महाराष्ट्र और हरियाणा की सरकारों ने संपूर्ण गोवंश की हत्या को पूर्ण प्रतिबंधित करते हुए कानून बनाया है इसके लिए ये सरकारें बधाई की पात्र हैं।

विश्व हिन्दू परिषद का केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल सभी संत समुदाय, कथाव्यास व अन्य सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कृषक संगठनों का आह्वान करता है कि वे गोपालन के प्रोत्साहन हेतु जन-जागरण करें तथा समाज से आग्रह करें कि वह असहाय, वृद्ध व बीमार

गोवंश का अपने घर में ही अपने माता-पिता की तरह सेवा करे।

प्रस्तावक : ज.गु.रामानुजाचार्य स्वामी कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य जी

अनुमोदक : 1. महंत नरेन्द्रगिरि जी महाराज, अध्यक्ष अखाड़ा परिषद
2.रेवासा पीठाधीश्वर ज.गु. राघवाचार्य जी महाराज, राजस्थान

प्रस्ताव - सामाजिक समरसता

नासिक कुंभ के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित केन्द्रीय मार्गदर्शक का यह सुविचारित मत है कि हिन्दू समाज में कोई पतित नहीं है। भारत माता हम सब भारतीयों की माँ है। हम सब हिन्दू, किसी प्रांत या बिरादरी के क्यों न हों, परस्पर सहोदर भाई हैं।

प्राचीन काल से हमारे पूर्वज इसी भूमि पर साथ-साथ रहे हैं। जब कभी कहीं से बाहरी आक्रमण आया तो हम सबने मिलकर उसका सामना किया, संघर्ष किया तथा बलिदान दिया है। इसी भूमि पर भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य, रामानंदाचार्य, योगी गोरक्षनाथ, बसवेश्वर, भगवान् वाल्मीकि, कबीरदास, रविदास, कनकदास, शंकरदेव, गुरुनानकदेव, नामदेव, नारायणगुरु, चैतन्य महाप्रभु, अल्वार, नायनमार, तिरुवल्लुवर और सूर, तुलसी, रामकृष्ण और स्वामी नारायण जैसे अनेकों संतों-भक्तों ने जन्म लिया है। आज भी भारतवासी इन्हीं संतों के अभंग एवं भजनों को गाकर और उनकी पवित्र वाणी को स्मरण कर अपनी एकात्मता एवं समरसता का परिचय दे रहे हैं।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल में उपस्थित संत समाज की मान्यता है कि हिन्दू धर्म में सामाजिक छुआछूत को कभी शास्त्रीय मान्यता नहीं रही है, क्योंकि हम सबकी संस्कृति समान है और उस संस्कृति में घोषित परम्परा है 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अर्थात् प्राणिमात्र में एक ही आत्मा है। जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी ने सिद्धान्त दिया है कि "सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणः सदा" अर्थात् सभी जीव सदा शरणागति के अधिकारी हैं। उन्होंने यहाँ तक कहा है कि "जाति, पाति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई। संत तुलसीदास जी ने भी सिया राममय सब जगजानि, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानि। कह कर सभी को सिय-राम रूप मानकर हाथ जोड़ कर प्रणाम किया है। भारत का दर्शन सर्वत्र प्रभु-दर्शन करता है तो फिर हिन्दू समाज में कोई भेदभाव हो ही नहीं सकता।

संत समाज हिन्दू समाज से अपेक्षा करता है कि सिद्धान्त और व्यवहार में एकरूपता निर्माण करते हुए समाज में व्याप्त, थोपी गई सामाजिक छुआछूत, ऊँच-नीच और छोटा-बड़ा के घृणित व्यवहार को शीघ्र ही अपने मन-मस्तिष्क से दूर करे और घोषणा करे 'हिन्दवः सोदरा सर्वे' 'न हिन्दुः पतितो भवेत्' 'हिन्दू हम सब एक' कोई हिन्दू अछूत नहीं।

हिन्दू समाज की एकता एवं रक्षा हेतु हिन्दू बन्धुओं से संत समाज अपेक्षा करता है कि-

- हमारे मंदिरों, घरों तथा संस्थाओं के द्वार सभी समाज-बन्धुओं के लिए खुले हों।
- सम्पूर्ण हिन्दू समाज अपने समाज के सभी घटकों को मंदिर प्रवेश और दर्शन कराने का प्रबन्ध करे।
- गांव की श्मशान भूमि एवं जल प्राप्त करने का तालाब, कुँआ, नल सभी के लिए उपलब्ध हो।
- महापुरुष किसी एक जाति वर्ग के न होकर सम्पूर्ण राष्ट्र के होते हैं अतः सभी महापुरुषों की जैसे-नानक, बुद्ध, महावीर, वाल्मीकि, रविदास आदि की जयन्तियाँ और पुण्य तिथियाँ सभी हिन्दू एकत्रित होकर मनायें।
- संत-महात्माओं से भी अनुरोध है कि वे अनुसूचित जातियों, जनजातियों की बस्तियों, ग्रामों में पदयात्र करें, प्रवचन करें, सत्संग प्रारंभ करें, सत्संगों का विस्तार करें और संगत व पंगत के द्वारा समरसता का निर्माण करें और उपदेश दें।
- विधर्मियों के द्वारा हिन्दू समाज के किसी घटक अथवा समुदाय को धर्मभ्रष्ट करने, हिन्दू जीवनमूल्यों तथा मानबिन्दुओं के अपमान के प्रसंगों पर सम्पूर्ण हिन्दू समाज एकजुट होकर प्रतिकार कर अपनी एकता का परिचय दें।

प्रस्तावक : पू. कमलनयन दास जी

अनुमोदक : श्रीमहंत सागरानंद जी महाराज अध्यक्ष षड्दर्शन साधु समाज, त्र्यम्बकेश्वर
आ.म.म. पू. पुण्यानंद जी महाराज,

निरंजनी पीठाधीश्वर, हरिद्वार

के.मा.मण्डल में उपस्थित पूज्य संतों की सूची

1. आ.म.म. पू. स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज, जूना पीठाधीश्वर
2. आ.म.म. पू. श्री स्वामी पुण्यानंद गिरि जी महाराज, निरंजनी पीठाधीश्वर
3. पू. म.म. बालकानंद गिरि जी महाराज
4. ज.गु. रामानुजाचार्य कौशलैन्द्र प्रपन्नाचार्य जी महाराज
5. पू. स्वामी गोविन्द देव गिरि जी, पुणे
6. पू. मलूकपीठाधीश्वर पू. श्री महंत राजेन्द्र देवाचार्य जी, वृन्दावन
7. श्री महंत फूलडोल बिहारी दास जी महाराज
8. पू. श्रीमहंत अग्रदेवाचार्य राघवाचार्य जी महाराज
9. पू. ज.गु. शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी, सुमेरुपीठाधीश्वर, काशी
10. पू. म.म. कौशलकिशोर दासजी, बड़ा भक्तमाल, अयोध्या
11. पू. श्रीमहंत कमलनयन दास जी महाराज, मणिराम छावनी, अयोध्या
12. पू. श्रीमहंत नरेन्द्र गिरि जी महाराज, अध्यक्ष अखाड़ा परिषद
13. पू. श्रीमहंत हरि गिरिजी महाराज, संरक्षक जूना अखाडा
14. पू. श्रीमहंत रवीन्द्रपुरी जी, सचिव निरंजनी अखाड़ा
15. पू. श्रीमहंत प्रेमगिरि जी, निरंजनी अखाड़ा
16. पू. श्रीमहंत डोंगर गिरि जी, निरंजनी अखाड़ा
17. पू. श्रीमहंत विद्यानंद सरस्वती जी, जूना अखाड़ा
18. पू. श्रीमहंत प्रेम गिरि जी, उपाध्यक्ष जूना अखाड़ा
19. पू. श्रीमहंत देवानंद सरस्वती जी, सचिव जूना अखाड़ा
20. पू. श्रीमहंत नारायण गिरि जी, सचिव जूना अखाड़ा
21. पू. श्रीमहंत रवीन्द्र पुरी जी, सचिव महानिर्वाणी अखाड़ा
22. पू. श्रीमहंत शिवनारायण पुरी जी, सचिव महानिर्वाणी अखाड़ा
23. पू. श्रीमहंत रमेश गिरी जी, सचिव महानिर्वाणी अखाड़ा
24. पू. श्रीमहंत सागरानंद सरस्वती जी, आवाहन अखाड़ा, अध्यक्ष षड्दर्शन साधू समाज, नासिक।
25. पू. श्रीमहंत शंकरानंद जी, आवाहन अखाड़ा
26. पू. श्रीमहंत रघु मुनि जी, उदासीन बडा अखाड़ा
27. पू. श्रीमहंत महेश्वर दास जी, उदासीन बड़ा अखाड़ा
28. पू. श्रीमहंत दुर्गादास जी, उदासीन बड़ा अखाड़ा
29. पू. श्रीमहंत संतोष मुनि जी, उदासीन बड़ा अखाड़ा
30. पू. भगतराम मुखिया जी, उदासीन नया अखाड़ा
31. पू. जगतार मुनि जी, उदासीन नया अखाड़ा
32. पू. श्रीमहंत ज्ञानदेव सिंह जी, निर्मल अखाड़ा
33. पू. श्रीमहंत सुरेशदास जी, दिगम्बर अनी अखाड़ा, अयोध्या
34. पू. श्रीमहंत वैष्णव दास जी, मंत्री दिगम्बर अनी अखाड़ा, अयोध्या
35. पू. दिव्यजीवन दास जी, दिगम्बर अनी अखाड़ा, चित्रकूट
36. पू. गंगादास जी, दिगम्बर अनी अखाड़ा, वडोदरा
37. पू. शिवशंकरदास जी, दिगम्बर अनी अखाड़ा, डूंगरपुर
38. पू. श्रीमहंत धर्मदास जी, निर्वाणी अनी अखाड़ा, अयोध्या
39. पू. श्रीमहंत रामजी दास, निर्मोही अनी, संतोषी अखाड़ा, चित्रकूट
40. पू. श्रीमहंत डॉ. रामेश्वर दास जी श्रीवैष्णव, ऋषिकेश
41. पू. श्रीमहंत मनमोहन दास जी राधे राधे बाबा, इंदौर
42. पू. श्रीमहंत हरिओम दास जी, बांसवाडा
43. पू. श्रीमहंत श्री रामकृष्ण दास पापुडिया मठ, पुरी, बारह भाई डांडिया
44. पू. म.म. गंगादास जी, जालन्धर
45. पू. म.म. संतोष दास जी, सतुआबाबा आश्रम, काशी
46. पू. म.म. रामबालक दास जी महात्यागी, छत्तीसगढ़
47. पू. म.म. भगवान दास जी, हरिद्वार, तेरह भाई त्यागी
48. पू. म.म. रामभूषण दासजी, भोपाल, तेरह भाई त्यागी
49. पू. म.म. विजयराम दास जी, भक्तमाल, अयोध्या
50. पू. म.म. पदम दास जी, भक्तमाल, नरसिंहपुर
51. पू. श्रीमहंत लाल दास जी, तेरह भाई त्यागी

शेष पृष्ठ 10 पर.....

ज्ञानप्राप्तिविचारः

सप्तदशोऽध्यायः

क्रमेणायाति किं ज्ञानं किञ्चित्किञ्चद्दिने दिने।
एकस्मिन्नेव काले किं पूर्णमाभाति भानुवत्॥२॥

भावार्थ - क्या ज्ञान क्रम से प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा आता है? अथवा एक ही समय में सूर्य के समान पूर्ण प्रकाशित होता है?

क्रमेणायाति न ज्ञानं किञ्चित् किञ्चित दिने दिने।
अभ्यासपरिपाकेन भासते पूर्णमेकदा॥३॥

भावार्थ - ज्ञान थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन क्रम से नहीं आता, किन्तु अभ्यास के परिपाक से एक साथ पूर्ण रूप से भासता है।

अभ्यासकाले भगवन् वृत्तिरन्तर्बहिस्तथा।
यातायातं प्रकुर्वाणा याते किं ज्ञानमुच्यते॥४॥

भावार्थ - भगवन्! अभ्यास काल में वृत्ति अन्दर और बाहर आती जाती है। क्या वृत्ति का अन्तर्लीनता ज्ञान कहलाती हैं ?

अन्तर्याता मतिर्विद्धन् बहिरायाति चेत्पुनः।
अभ्यासमेव तामाहु र्ज्ञानं ह्यनुभवोऽच्युतः॥५॥

भावार्थ - हे विद्वन! अन्दर जानेवाली मति यदि फिर बाहर जाती है, तो उसे अभ्यास ही कहते हैं। ज्ञान तो अनपच्युत स्थिर अनुभव है।

ज्ञानस्य मुनिशार्दूल भूमिकाः काश्चिदीरिताः।
शास्त्रेषु विदुषां श्रेष्ठैः कथं तासां समन्वयः॥६॥

भावार्थ - हे मुनिश्रेष्ठ! शास्त्रों में विद्वानों ने ज्ञान की कुछ भूमिकाएँ कही हैं, उनका समन्वय कैसे हो?

शस्त्रोक्ता भूमिकाः सर्वा भवन्ति परबुद्धिगाः।
मुक्तिभेदा इव प्राज्ञ ज्ञानमेकं प्रजानताम्॥७॥

भावार्थ - हे विद्वन! शास्त्रोक्त समस्त भूमिकाएँ मुक्तिभेद के समान केवल दूसरों की बुद्धियों को ही प्रतीत होती है। ज्ञानियों के लिए ज्ञान एक ही है।

चर्यो देहेन्द्रियादीनां वीक्ष्यारब्धानुसारिणीम्।
कपयन्ति परे भूमीस्तारतभ्यं न वस्तुतः॥८॥

भावार्थ - प्रारब्ध का अनुसरण करने वाले देह तथा इन्द्रियादि के व्यापार को देखकर दूसरे लोग ज्ञान-भूमियों की कल्पना करते हैं। किन्तु वास्तव में उनमें कोई तारतम्य नहीं है।

प्रज्ञानमेकदा सिद्धं सर्वाज्ञान-निबर्हणम्।
तिरोधात्ते किमज्ञानात् सड.ादड्.कुरितात्पुनः॥९॥

भावार्थ - क्या समस्त अज्ञान का नष्ट करनेवाला प्रज्ञान एक बार सिद्ध होने पर भी आसक्ति से उदित अज्ञान के कारण पुनः तिरोहित हो जाता है?

अज्ञानस्य प्रतिद्वन्द्वि न पराभूयते पुनः।
प्रज्ञानमेकदा सिद्धं भारद्वाजकुलोद्वह॥१०॥

भावार्थ - हे भारद्वाजकुल श्रेष्ठ! अज्ञान का विरोधी, एक बार सिद्ध हुआ ज्ञान फिर पराजित नहीं होता।

॥ इतिश्री रमणगीता समाप्त॥

❑

.....पृष्ठ 9 का शेष

52. पू. म.म. रामकिशन दास जी, भीलवाड़ा
53. पू. म.म. चेतन दास जी मेवाड, खालसा
54. पू. म.म. दयाराम दास जी, ब्रह्मपुरी, ऋषिकेश
55. पू. म.म. श्यामदास जी, खाटू श्याम, राजस्थान
56. पू. म.म. मंझले मुरारी बाबू, इन्दौर
57. पू. श्रीमहंत देवनारायण दास जी, कानपुर देहात, (बारह भाई डांडिया)
58. पू.म.म. रामतीर्थ दास जी, प्रयाग
59. पू. म.म. विमलशरण जी, मधुबनी, बिहार
60. डॉ. रामविलासदास वेदान्ती जी, अयोध्या
61. श्रीमहंत प्रेमदास जी, खेडापति हनुमान मंदिर, चौमू, राजस्थान
62. श्रीमहंत रामस्वरूपदास जी, अखनूर, जम्मू कश्मीर
63. स्वामी परमात्मानंद जी सरस्वती, ओडिसा
64. साध्वी प्रज्ञा भारती जी, भोपाल
65. साध्वी कमलेश भारती जी, दिल्ली
66. साध्वी चन्द्रकला जी, छत्तीसगढ
67. पू. योगिराज दिव्यानंद जी महाराज, हरियाणा
68. पू. प्रेमानंद गिरि जी महाराज, घाटकोपर, मुम्बई

धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रशासन का हस्तक्षेप दु:खद और भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला

-डॉ. प्रवीणभाई जी तोगड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विहिप

दिल्ली, 20 अगस्त, 2015। सन्माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय के संथारा पर प्रतिबन्ध लगाने के निर्णय पर दु:ख और आक्रोश व्यक्त करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने कहा, "भारत में प्राचीन समय से समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ, गतिविधियाँ, धर्म स्थान, और श्रद्धाएँ हैं। युगों से उन्हें भारत के करोड़ों सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख आदि अपने जीवन में संजोएँ हुए हैं। इन सभी समाजों को जब जब ऐसा लगा कि कुछ गतिविधियों, परम्पराओं में समाज के हित में कुछ परिवर्तन करना चाहिए, तब तब धार्मिक आचार्य, समाज की विद्वानगण और अन्य लोगों ने मिलकर कई परिवर्तन स्वयं ही किये हैं, जैसे कि कन्या शिक्षा, विधवा विवाह आदि।"

डॉ. तोगड़िया ने कहा- "परन्तु आजकल पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होकर, जो जो भारतीय सनातनी, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि हैं उन के प्रति घृणा दिखाना और उन्हें अपमानित करना यह एक फैशन हुयी है। ऐसे पाश्चिमात्य विचारों से पूर्वाग्रह दूषित होकर कोई भी प्रशासनिक प्रणाली भारत के धर्म/संस्कृति /कला, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ, धर्मस्थान आदि में इन धर्म/परंपराओं/ संस्कृति/ श्रद्धाओं को माननेवालें और उन का पालन करने वाले इन की भावनाओं को आहत ना करें। भारत की प्राशासनिक प्रणालियों- सरकारें /न्यायपालिका आदि- का सम्मान करते हुए हम उन्हें विनम्र विनती करते हैं कि भारत की धार्मिक /सांस्कृतिक परम्पराएँ और गतिविधियाँ, श्रद्धाएँ, धर्मस्थान आदि के निर्णय भारत के धार्मिक-सामाजिक आचार्यों पर, उन परंपराओं/श्रद्धाओं का पालन करनेवाले करोड़ों लोगों पर और उनमें से आएं विद्वानों/ उन समाजों के प्रतिनिधियों पर ही छोड़े जाएँ और इन में से किसी में कोई भी प्राशासनिक प्रणाली हस्तक्षेप ना करें। पाश्चात्य सभ्यता या वामपंथी विचारों से धार्मिक, सांस्कृतिक बातों में किये गए प्राशासनिक हस्तक्षेप से भारत के करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाएँ आहत होती हैं।"

सम्पर्क: vhp.prezoffice@gmail.com

सत्संग सप्ताह कार्यक्रम

दिनांक 30 अगस्त से 6 सितम्बर तक पश्चिम विभाग में इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सत्संग सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें 6 जिलों से 92 कार्यक्रमों में 8450 लोगों ने भाग लिया। विभाग के 92 कार्यक्रमों में विशेष रूप से वक्ता के रूप में श्री शिवदत्तजी, सतेन्द्र मोहन जी, जगदीश अगरवाल जी, अनिल जी, धर्मपाल गर्ग जी, श्रीमती मधु सेठ जी, प्रान्त के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज के प्रसिद्ध संत आचार्य स्वामी नरेशजी आर्य, स्वामी योगीजी महाराज गोदियामठ विभाग के कार्यकर्ताओं में विभाग मंत्री, विभाग उपाध्यक्ष, दो जिलों के संगठन मंत्री, जिला मंत्रियों ने विषय रखा। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से समाज का सहयोग मिला। यह एक ऐसा कार्यक्रम था जिसमे परिषद् का कोई खर्च नहीं हुआ न दान लिया परन्तु अधिक कार्यक्रमों में भंडारा एवं सभी कार्यक्रमों में प्रसाद वितरण किया। इस कार्य में 15 नई कीर्तन मंडलियों से सम्पर्क हुआ।

प्रेषक : **शान्ति प्रसाद**, विभाग मंत्री

रामचरित मानस का डिजिटल संस्करण जारी

नई दिल्ली, (भाषा): प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आकाशवाणी द्वारा निर्मित रामचरितमानस के डिजिटल संस्करण के सीडी सैट को जारी किया और कहा कि यह एक ऐसा महाकाव्य है, जिसमें भारत का सार समाहित है। इस संगीतमय प्रस्तुति में योगदान देने वाले कलाकारों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने ऐसा करके न सिर्फ संगीत साधना की है, अपितु संस्कृति साधना और संस्कार साधना भी की है। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार मोदी ने रामचरितमानस को एक महान महाकाव्य करार दिया, जिसमे भारत का सार समाहित है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि किस प्रकार मॉरिशस जैसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करने वाले भारतीयों ने कई पीढ़ियों से रामचरितमानस के माध्यम से भारत के साथ संपर्क बनाए रखा है। उन्होंने लोगों को आपस में जोड़ने और भारत में जागरूकता और सूचना का प्रसार करने में आकाशवाणी

नई दिल्ली में सोमवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रामचरित मानस के डिजिटल संस्करण जारी करते हुए, साथ में हैं वित्त एवं सूचना प्रसारण मंत्री अरुण जेटली और सूचना प्रसारण सचिव विमल जुल्का।

द्वारा निभाई जा रही भूमिका की सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें बताया गया है कि आकाशवाणी के पास देशभर के विभिन्न कलाकारों की 9 लाख घंटों से ज्यादा की रेडियो रिकार्डिंग्स हैं। ❑

मन्दिर तोड़ने पर जनाक्रोश

डी.डी.ए. द्वारा प्रियदर्षनी विहार मे स्थित श्री लक्ष्मी नरायण मन्दिर को ध्वस्त कर दिया गया। अखण्ड भारत मोर्चा के अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने रोश व्यक्त करते हुऐ कहा कि डी.डी.ए की अरबों रुपये की जमीन गाजीपुर डेरी फार्म मे बंगलादेशीयों ने कब्जाई हुई है जिसके खिलाफ सैकड़ों हस्ताक्षरयुक्त शिकयतें डी.डी.ए. व दिल्ली पुलिस को दिऐ जा चुकें है। सुभाष पार्क पर बनी अवैध मस्जिद पर तो कोर्ट का आदेश भी है जिस पर दिल्ली पुलिस फोर्स उपलब्ध न होने का बहाना बना कर संरक्षण का काम कर रही है। दूसरी ओर एक हिन्दू कालोनी (प्रियदर्शनी विहार) में हजारों पुलिस कर्मी तैनात करके पुरे इलाके को छावनी बनाकर मन्दिर ध्वस्त करवा दिया गया। श्री आहूजा ने चेतावनी देते हुऐ कहा कि इस प्रकार के दोहरे मापदण्ड दिल्ली की माहौल खराब कर सकते है। मन्दिर टुटने का विरोध करने वाले प्रर्दशकारियों पर लाठीचार्ज किया गया। प्रदर्शनकारीयों को गिरफ्तार करके आनन्द विहार पुलिस थाने ले जाया गया।

प्रदर्शनकारिओं मे मुख्यरुप से अखण्ड भारत मोर्चा

के अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा एंव मोर्चा के श्री प्रवेश चौधरी, श्री विकास गर्ग, श्री शिवा ठाकुर विश्व हिन्दू परिषद् के श्री दीपक गुप्ता, आचार्य ओम प्रकाश, श्री प्रमोद जैन, श्री कामेश आचार्य एवं हिन्दू महासभा के श्री लवी भारद्वाज, हिन्दू सेना के श्री विष्णु गुप्ता एवं भाजपा के जिलाध्यक्ष श्री कवंरसेन, श्री कृष्ण भारद्वाज, श्री श्रवण दीक्षित आदि सैकड़ों कार्यकर्ता के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैंकड़ों लोग उपस्थित थे।

प्रेषक : **राजश्री आहूजा**
(प्रचारमंत्री)

दोहरे आतंक का खतरा ...

क्या ऐसे पाकिस्तान से कभी शांति के लिए कोई वार्ता संभव हो सकेगी, जहां की सरकार केवल सेना व आई एस आई के भरोसे हो और ये दोनों ही आतंकवादी संगठनो को पाल पोस कर खतरनाक घटनाओं को अंजाम देकर भारत में हजार वर्षो तक घाव करते रहने की शपथ से विवश होकर दारुल इस्लाम या निजामे मुस्तफा बनाना चाहते हो। अब तो इस्लामिक स्टेट ने भी भारत को 2020 तक खिलाफत के लिए 'खुरासान' बनाने की चेतावनी दें दी है। जिससे मजहबी आतंकवाद का खतरा नि:संदेह दोहरा बढ़ गया है।

कुछ वर्षो पूर्व संयुक्त राष्ट्र (4.11.2008) की रिपोर्ट के आधार पर आये समाचारों से ज्ञात होता है कि 10 से 13 वर्ष के बच्चों को प्रशिक्षण देकर अलकायदा व तालिबान जैसे खूंखार जिहादी संगठन आत्मघाती दस्ते तैयार करते है और उनके माँ-बापों को हजारों डॉलर देकर व जन्नत का वास्ता देकर खुश रखते है। पाकिस्तान के बाजौर एवं मोहम्मद तथा अफगानिस्तान के कुनार एवं नुरिस्तान आदि क्षेत्रो में तो ऐसे बच्चों को (जो जिहाद के लिए तैयार हो जाते है) दूल्हे की तरह सजा कर घोड़े पर बैठा कर पूरे गाँव में घुमाया जाता है और गाँव के लोग उनके माँ बाप को मुबारकबाद देते है। तालिबान ने 'फिदायीन-ए-इस्लाम' नाम से पाकिस्तान व अफगानिस्तान की सीमा पर वजीरिस्तान मे ऐसे कुछ प्रशिक्षण शिविर चला रखे है जहां हजारों कम उम्र के बच्चे आत्मघाती बनाये जा रहे है । इसी प्रकार वे एक ओर तो महिलाओं को नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर करते है वही दूसरी ओर उन्हीं महिलाओं को भी आत्मघाती बनाने के लिए प्रशिक्षण शिविर चलाते है। पहले से ही यह संकट समझ में आ रहा था कि अफगानिस्तान से नाटो सेनाओं के हटने के बाद ये सब अब जिहाद के लिए हमारे देश पर ही घात लगाएंगे।

अब जब इन सबका केंद्र भारत होगा तो उस स्थिति में भी क्या कोई शान्ति की वार्ता आगे बढ़ सकेगी? क्या यह निर्रथक, आत्मघाती व संकट से मुहँ मोड़ने की कायरता नहीं होगी?

अत: हमारी सरकार को निकट भविष्य में आ रहे इस संकट से निपटने के लिए अब आतंकवादियो के प्रशिक्षण केन्द्रो व गुप्त अड्डो को जिनका जाल (नेटवर्क) पीओके व देश की सीमाओँ व विभिन्न नगरो में फैल चुका है को लक्ष्य बना कर दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ नष्ट करना होगा। पिछले 35 वर्षो के विभिन्न समाचारों से समय-समय पर आती रही गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों से बहुत कुछ जिहादी केन्द्रो का पता चलेगा और देश के पूर्व व वर्तमान गुप्तचर अधिकारी व कर्मचारी भी अवश्य सहायक हो सकेंगें। क्योकि यह आतंकवादी जिहाद बंग्ला देश (1971) के बनने के बाद से ही बदले की भावना के वशीभूत ज्यादा उग्र होता जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस्लामिक स्टेट के क्लिक करते ही इन गुप्त अड्डो से हजारों जिहादी भीषण रक्तपात मचायें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी?

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

'ॐ' के उच्चारण पर भी छिड़ सकता है विवाद : मोदी

नई दिल्ली, (भाषा): योग दिवस समारोहों को लेकर बड़ा विवाद छिड़ने के कुछ महीनों बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज कहा कि ॐ का उच्चारण भी देश में विवाद का कारण बन सकता है तथा ''वैचारिक धरातल पर कई उतार चढ़ाव'' हैं। उन्होंने कहा, ''हमारे देश में कई उतार चढ़ाव आये हैं। वैचारिक धरातल पर भी कई उतार चढ़ाव आए हैं। आज कोई ॐ बोल दे तो हफ्ते भर विवाद चलते हैं कि ॐ कैसे बोला जा सकता है।'' मोदी ने अपनी इस टिप्पणी को अधिक विस्तार नहीं दिया। उनकी यह टिप्पणी योग दिवस समारोह के कई महीनों बाद आयी है। 21 जून को मनाए गए योग दिवस समारोह में कई मुस्लिम समूहों ने कहा था कि वे इसमें भागीदारी नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें ॐ का उच्चारण करना पड़ता है जो हिन्दुत्व से जुड़ा है। ❑

गुरुकुल प्रभात आश्रम में राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठी संपन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के 121 वें जन्मदिवस के अवसर पर श्रावण शुक्ला एकादशी विक्रमाब्द 2072, तदनुसार 26 अगस्त 2015, बुधवार को संपन्न हुई गोष्ठी का विषय था-'वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता।' गोष्ठी में समागत विद्वानों का प्रभाताश्रम की वैदिक परम्परानुसार शंखवादन, तिलक-चर्चन, श्रीफल एवं फलों की माला से विद्वानों का स्वागत किया गया। गोष्ठी का शुभारंभ सरस्वती वन्दना एवं विद्वानों की स्वागत-गीतिका से हुआ। समागत विद्वानों में गोष्ठी के समुद्घाटन सत्र के अध्यक्ष महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन के पूर्व सचिवश्री प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय तथा संयोजक प्रो. सोमदेव शतांशु थे। शोधपत्र वाचकों में प्रो. रमेश भारद्वाज (दिल्ली वि. वि.), प्रो. सुरेन्द्र कुमार (महर्षि दयानन्द वि.वि), डॉ. रामसुमेरू यादव (लखनऊ वि. वि.), डॉ. विनोद शर्मा (वृन्दावन), डॉ. जगमोहन (दिल्ली वि.वि), डॉ. सत्यकेतु (लखनऊ वि.वि.), डॉ. वेदव्रत (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.), डॉ. सत्यपाल सिंह (दिल्ली वि.वि.) प्रमुख थे। समर्पणानन्द वैदिक शोधसंस्थान के निर्देशक डॉ. मानसिंह जी ने अभ्यागतों का तथा पूज्य स्वामी अनन्त भारती जी ने अपने शोधपत्र के साथ सभी शोधपत्र-वाचकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता का विशद विवेचन करते हुए गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलाधिपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने उसके प्रचार प्रसार पर बल दिया।

जिन तीस शोधपत्रों का वाचन हुआ उनका पावमानी के अगले अंक में प्रकाशन होगा जिससे अन्यान्य पाठक भी लाभान्वित होगें। ❑

वजन घटाने में बेहद मददगार

वजन घटाने के लिए अक्सर लोग खाना कम देते हैं। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि वजन कम करने के लिए खाना कम करने की जगह सही और पोशक तत्वों से भरपूर भोजन लेना चाहिए। आहार विशेषज्ञ फ्रिदा हरजू के मुताबिक, वजन कम करना है, तो फाइबर से भरपूर चीजों को अपने भोजन में शामिल करें।

नारियल

नारियल में मीडियम चेन फैटी एसिड (एमसीएफए) पाया जाता है। यह वसा शरीर में जमा नहीं होती बल्कि ऊर्जा देती है। नारियल में उच्च मात्रा में कैलोरी होती है, यह वजन घटाने में मददगार हैं लेकिन थोड़ी मात्रा में ही लेना चहिए।

ग्रीन टी

ग्रीन टी में मौजूद तत्व शरीर की चयापचय क्रिया को बढ़ाते हैं। ग्रीन टी में मौजूद कैटेचिन शरीर में गर्मी बढ़ाता है और पाचन को दुरुस्त करता है। एक दिन में पाँच कप ग्रीन टी से 90 कैलोरी बर्न होती है।

हरी पत्तेदार सब्जियाँ

हरी पत्तेदार सब्जियाँ फाइबर से भरी होती हैं। इनमें कैलोरी भी कम होती है। पालक, पत्तागोभी फाइबर से भरपूर होते हैं, इन्हें खाने से वजन घटता है।

काली मिर्च

अमेरिका की पड्र्य यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया कि कालीमिर्च खाने से भूख कम लगती है। कालीमिर्च खाने के बाद चयापचय क्रिया बढ़ जाती है और खाना जल्दी पचता है।

मौसमी

रोज एक गिलास मौसमी का जूस शरीर में वसा को कम करता है और चयापचय क्रिया को बढ़ाता है। साथ ही मौसमी का जूस पीने से भूख भी नहीं लगती।

दालचीनी

मसाले के तौर पर दालचीनी का इस्तेमाल चयापचय क्रिया को दुरुस्त करता है। दालचीनी शरीर में वसा को जमने से रोकती है।

जनसंख्या असंतुलन देश के अस्तित्व और पहचान के लिए खतरा

-डॉ. सुरेन्द्र जैन

नई दिल्ली, 27 अगस्त, 2015। जनगणना केवल आंकड़े नहीं, उस समूह की पहचान होती है। भारत की जनसंख्या का तेजी से बढ़ता असंतुलन न केवल उसकी पहचान समाप्त कर रहा है अपितु भारत के अस्तित्व के लिए भी खतरा बनता जा रहा है। नई दिल्ली में आयोजित पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने यह भी कहा कि भारत की पहचान सर्वपंथ, समभाव व वसुधैव कुटुम्बम् आदि सद्गुणों से है जो यहां के बहुसंख्यक हिन्दू समाज के कारण निर्माण हुई है। हिन्दुओं की घटती जनसंख्या इस पहचान के लिए खतरा बनेगी। 2011 के जनसंख्या आंकड़ों का विश्लेषण करने पर एक खतरनाक संकेत मिल रहा है। देश में हिन्दुओं की जनसंख्या पहली बार 80 प्रतिशत से कम हुई है। जिन जिलों या राज्यों में हिन्दुओं की संख्या कम हुई है उनकी स्थिति को देखकर भविष्य के संकेत आसानी से समझे जा सकते हैं। पूरी कश्मीर घाटी, बिहार व बंगाल के तीन तथा असम के नौ मुस्लिम बाहुल्य जिलों में साम्प्रदायिक सद्भाव समाप्त हो चुका है। गैरमुस्लिम वहां अपने अस्तित्व को नहीं बचा पा रहे हैं। राज्य तथा केन्द्र सरकार भी इन स्थानों पर पंगु दिखाई देती है। शायद इसी कारण कुछ मुस्लिम नेता भविष्य की ओर संकेत करते हुए चेतावनी देते हैं कि जब हम 20 प्रतिशत हो जायेंगे तो हिन्दुओं को उनकी शर्तों पर रहना होगा।

विश्व हिन्दू परिषद जनसंख्या के बढ़ते असंतुलन के लिए विदेशी घुसपैठ, धर्मान्तरण तथा एक वर्ग की आक्रामक नीति को जनसंख्या वृद्धि करने का प्रमुख कारण मानती है। मुस्लिम समाज का एक बड़ा वर्ग जनसंख्या वृद्धि को एक मिशन मानता है। कुछ कट्टरपंथी दारूल इस्लाम का सपना दिखाकर इस मार्ग पर चलने के लिए उन्हें विवश करते हैं। विहिप का मानना है कि इस खतरे के दुष्परिणाम हिन्दू समाज व भारत को तो झेलने ही पड़ेंगे किन्तु मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं रहेगा। आबादी बढ़ाने के इस अभियान के कारण उन्हें पिछड़ा रहने के लिए अभिशप्त रहना ही पड़ेगा। इसलिए मुस्लिम समाज से हमारी अपील है कि इस अभियान के अपने ऊपर होने वाले दुष्परिणामों को ठीक करने हेतु आंतरिक सुधार की प्रक्रिया चालू करे। दुनिया के सभी सभ्य समाज परिवार नियोजन को स्वीकार करते हैं तो वे क्यों नहीं? उनके आदर्श बाबर और गौरी नहीं, चाचा अब्दुल कलाम ही हो सकते हैं। उनके काम से देश के लिए निर्माण की गई कोई भी कठिनाई उनके स्वयं के लिए भी संकट का कारण बनेगी।

विश्व हिन्दू परिषद की भारत की सभी सरकारों से अपील है कि वे सम्पूर्ण देश में सभी समाजों के लिए समान जनसंख्या नीति का निर्माण करें। जिसके लिए न्यायपालिका भी कई बार कह चुकी है। बांग्लादेश व बर्मा से हुई घुसपैठ न केवल जनसंख्या असंतुलन बल्कि देश पर खतरे का भी कारण बन चुकी है। उनको रोकना, पहचानना व वापस भेजना सभी सरकारों का संवैधानिक व नैतिक दायित्व है। धर्मान्तरण के विषय में भी भारत का संविधान व न्यायपालिका बहुत स्पष्ट हैं। विहिप हिन्दू समाज का आह्वान करती है कि वह अपने तथा देश पर मंड़राते हुए इस खतरे की भयावहता को समझे तथा संगठित होकर सरकारों पर इस संबंध में सार्थक कदम उठाने हेतु दबाव बनाए।

पत्रकारवार्ता में जनसांख्यिकी विशेषज्ञ प्रो. राकेश सिन्हा (निदेशक, भारत नीति प्रतिष्ठान) भी विशेष रूप से उपस्थित थे तथा उन्होंने पत्रकारों को इस विषय की गंभीरता के बारे में बताया।

❑

गौरक्षा विभाग- उत्तर क्षेत्र की बैठक सम्पन्न

भारतीय गोवंश रक्षण-संवर्द्धन परिषद की उत्तर क्षेत्र के पांच राज्यों (जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा व दिल्ली प्रदेश) के कार्यकर्त्ताओं की बैठक दिनांक 15-16 अगस्त को देवी तालाब मन्दिर, जालन्धर में सम्पन्न हुई। बैठक में गौ-रक्षा विभाग के अखिल भारतीय संगठक श्री खेमचन्द जी शर्मा, केन्द्रीय मन्त्री श्री सन्त राम जी गोयल (गुरूग्राम), उत्तर क्षेत्र संगठन मन्त्री श्री करूणा प्रकाश जी (केन्द्र दिल्ली) एवं इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र गौरक्षा प्रमुख श्री राष्ट्र प्रकाश जी (दिल्ली) की उपस्थिति उल्लेखनीय रूप से पूरे समय रही। प्रान्तों से- जम्मू कश्मीर गौरक्षा प्रमुख श्री अशोक जी, इन्द्रप्रस्थ गौरक्षा प्रमुख श्री रमेश जी व सह-प्रमुख अरविन्द जी, हरियाणा प्रान्त प्रमुख डा. रमेश यादव जी, पंजाब प्रान्त प्रमुख श्री सरदारी लाल शारदा, हिमाचल प्रदेश प्रमुख श्री रामकृष्ण जी व श्री ताराचन्द जी (दिल्ली) के साथ आए विभाग व प्रान्तों के जिलों को दायित्ववान कार्यकर्ताओं (कुल 97 संख्या) ने बैठक में उपस्थित हो, अपने-अपने प्रान्तों की स्थिति व कार्य की दृष्टि से विस्तृत चर्चा के लिये सहभागी बने।

बैठक का प्रारम्भ प्रातः 9:30 बजे दीप प्रज्वलन, गौमाता के चित्र पर माल्यार्पण के साथ विहिप की बैठक पद्धति अनुसार कर, श्री खेमचन्द जी ने जबलपुर में हुई अखिल भारतीय बैठक के निर्णयानुसार क्षेत्रशः बैठक की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार से जिले स्तर तक के कार्यकर्ता भाग लेकर गौरक्षा कार्य के विस्तार में भूमिका निभा सकते हैं। उद्घाटन सत्र में गौरक्षा विभाग के आयाम भारतीय गौवंश रक्षण-संवर्द्धन परिषद, गौवंश हत्या एवं मांस निर्यात विरोध परिषद, राष्ट्रीय गौरक्षा आन्दोलन समिति तथा गौविज्ञान परीक्षा समिति के कार्यों की विस्तृत जानकारी दी गई। मा. मोरोपन्त पींगले जी की परिकल्पना का साकार रूप गौविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापुर (नागपुर) में किए जा रहे पंचगव्य उत्पाद की विस्तृत जानकारी के साथ बेसहारा व लावारिस गऊ माँ की उपयोगिता को ध्यान में रखकर योजना बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। श्री करूणा प्रकाश जी, (उत्तर क्षेत्र संगठन मन्त्री, विश्व हिन्दू परिषद) ने संगठनात्मक जानकारी के साथ-साथ विहिप की विकास यात्रा पर प्रकाश डालते हुए आग्रह किया कि प्रत्येक कार्यकर्ता जिम्मेवारी के साथ गौसंवर्द्धन एवं रक्षा के लिए कार्यकर्ता निश्चित कर गौशाला की स्थापना/आर्थिक सहयोग व व्यवस्था द्वारा गौवंश रक्षा कर, गौवंश को बढ़ाने तथा जिला इकाई का गठन कर जैविक खेती के किसानों को प्रेरित करने, पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र स्थापित करना, गौ-विज्ञान परीक्षा कराने व गौशालाओं में नस्ल सुधार की दृष्टि से अच्छी वंशावली के सांड के विषय पर चर्चा कर सहभागी बनें।

डॉ. रमेश यादव ने अपने उद्बोधन में बताया कि वैदिक काल में समृद्ध खेती का मुख्य कारण कृषि कार्य का गौवंश आधारित होना ही रहा है। प्रत्येक किसान गौपालन एवं पंचगव्य आधारित कृषि करता था व वैद्य भी चिकित्सा के लिए पंचगव्य का ही उपयोग करते थे जिसका आर्युवेद में अनेकों उल्लेख हैं और तब हम 'विश्व गुरू' कहलाते थे। गौसंवर्द्धन एवं गौवंश आधारित कृषि की चर्चा करते हुए उन्होने उल्लेख किया कि भारतभूमि ऋषि, कृषि व गौ संस्कृति का देश है। गौमाता मनुष्य जीवन का एक अविभाज्य अंग है। गौमाता अपने आप में एक देवालय एवं औषधालय भी है। गौवंश आधारित कृषि सिद्ध हो गई है कि श्रेष्ठ कृषि पद्धति है एवं इसकी मान्यता भी बढ़ रही है। गौमाता कल्याणकारी एवं मंगलदायिनी है एवं जीवन के चारों पुरूषार्थ "धर्म,

अर्थ, काम व मोक्ष" दायिनी-कामधेनु ही है, अत: विश्व की माता है। अनेक प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि ह्गऊह ही एक मात्र ऐसा जीव है जो सम्पूर्ण जीवन है। इसके द्वारा पर्यावरण, जल व जमीन के संरक्षण होकर केवल मानव समाज ही नहीं अतू सम्पूर्ण श्रृष्टि में व्यापक चर-अचर जीवों का पोषण करने की सक्षमता है। आवश्यकता है तो केवल स्वदेशी भारतीय नस्लों के संवर्धन की जिसका दूध भी ठब्ड.7 मुक्त होने के कारण अनेक विकारों/व्याधियों से छुटकारा दिलाने में सक्षम है और विश्व भर में ।.2 प्रोटीन के दुध का महत्व व उपयोगिता ध्यान में आ रही है। सभी वर्तमान में उपलब्ध 37 भारतीय स्वदेशी नस्लों (ठवे पदकपबने) अपनी विशिष्ट पहचान (ककुभ/खुंद, गल कम्बल व कान की संरचना आदि गुण) के कारण युरोपियन नस्लों ठवे जंनतने से भिन्न है, जिनका दूध भी ।.1 प्रोटीन के कारण विष रूप दूध में शैतान (क्मअपस पद डपसा) कहा गया है। गऊ वंश संवर्धन के लिए 'उत्तम नस्ल' के सांड की आवश्यकता पर बल देते हुए आधुनिक तकनीकों (कृत्रिम गृभादान, भ्रूण प्रत्यारोपण व पद अपजतव मितजपसप्रंजपवद) के इस्तेमाल कर उचित प्रबंधन के द्वारा गऊ वंश का तेजी से संवर्धन किया जा सकता है और वर्तमान में आवश्यकता भी है कि गीर, थारपारकर, साहीवाल, राठी व लाल सिंधी का दूध उत्पादन के लिए तथा हरियाणा, कांकरेज व औंगोल नस्लों का दूध व भार आदि कार्य के लिए तथा शेष सभी स्वदेशी नस्लों का भूगोलिक-जलवायु आदि वातावरण को ध्यान में रखकर विकास किए जाने की आवश्यकता है।

बैठक में चर्चा के समय गौ-तस्करी को रोकने के लिए नौजवान गौरक्षक एवं चिकित्सा की आवश्यकता जताई तथा टीम आधार पर कार्य करने पर बल दिया गया व प्रत्येक जिले में कम से कम एक ग्राम को गोद लेकर 'गौवंश विकास व जैविक कृषि' को अपनाने की आवश्यकता बताई। कार्यकर्ताओं को गौपालकों व किसानों के ग्रासले को भरना होगा ताकि देश की प्रगति के लिए नितियों को ईमानदारी से लागू किया जा सके। गौशाला प्रबंधन एवं गऊ वंश का रखरखाव तथा चिकित्सा आदि की नियमावली व बजट आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की गई। गौ अभ्यारण/गोचर भूमि के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। हरियाणा एवं पंजाब सरकार इस दिशा में आगे बढ़ रही है अत: साधुवाद किया गया। प्रत्येक प्रान्त में जिलास: कार्यकर्ताओं की बैठक की योजना बनाकर गऊ वंश आधारित व सम्बन्धित कार्य विस्तार का आह्वान किया गया।

पंचगव्यों का उत्पादन ही भारतीय जीवन शैली व अर्थव्यवस्था के साथ-साथ स्वास्थ्य का अभिन्न अंग रहा है जिसको ध्यान में रखकर विश्व का सुरक्षा चक्र मजबूत किया जा सकता है तथा गऊवंश आधारित कृषि कार्य व उत्पाद से ही विश्व भर की मांग को पूरा करने में भारत सक्षम हो सकेगा। स्वच्छ पर्यावरण की दृष्टि से भी विषम परिस्थितियों बसपउंजम बींदहम तथा हसवइंस ूंतउपदह को सहने व सृष्टि को बचाने का एक मात्र विकल्वप 'गौवंश' ही बनेगा। हिन्दू संस्कृति का अर्थ ही गौसेवा है - अत: विभिन्न पर्वों व पारिवारिक अनुष्ठानों में बढ़-चढ़ कर गौ-पूजन व गौ ग्रास/ योगदान दने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री राष्ट्र प्रकाश द्वारा 'पंचगव्य' की उपयोगिता पर चर्चा आरम्भ की। जिनमें मुख्यत: चिकित्सा व जैविक खेती पर विशेष रूप से उल्लेख कर कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभव साझे किए। पंजाब गौ-आयोग के अध्यक्ष श्री किमती भगत जी ने आयोग द्वारा किए जा रहे कार्यों का विस्तार से प्रकाश डाला। चर्चा में विद्यासागर बागला (हरियाणा), करतार सिंह (हिमाचल प्रदेश), सरदारी लाल शारदा व कन्हैया लाल राजपुरोहित (पंजाब) ने विशेष रूप से भाग लेकर अनुभव साझे किए। केन्द्रीय मन्त्री श्री सन्तराम गोयल जी ने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वो गौवंश को कुड़ा-करकट खाने से बचाकर उनके लिए चारे व दाने का उचित स्थान पर प्रबंधन करे तथा इसके लिए रेहडी/जूस कार्नर आदि से सम्पर्क कर सहज रूप से चारा प्रबंधन किया जा सकता है।

समारोप कार्यक्रम में गौ सेवा दिव्य ज्योति जागृति संस्थान से स्वामी चिन्म्यानन्द जी महाराज व स्वामी सज्नानंद जी का सानिध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। स्वामी चिम्मयानन्द जी ने कहा गऊ जो कि विश्व की माँ है ऐसा बताने के लिए विडम्बना है कि गोष्ठिया करनी

शेष पृष्ठ 18 पर.....

शहीद बाबा बंदा सिंह बहादुर जी शहीदी दिवस

31 अगस्त 2015, नई दिल्ली। 7 और 9 वर्ष के बाबा फतेह सिंह बाबा जोरावर सिंह सरहिन्द की दिवारों में मुगल शासक द्वारा इसलिए चुनवा दिए गए कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। सरहिन्द की नहीं, बल्कि पूरे मुगल सम्राट की ईंट से ईंट बजाते हुए उसको जड़ से उखाड़ फैंककर बाबा बंदा सिंह बहादुर ने जो स्वर्णिम इतिहास रचा, वह हिन्दुस्थान का गौरवमयी पृष्ठ है। उपरोक्त विचार प्रकट करते हुए राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री अविनाश जायसवाल जी ने बाबा बन्दा सिंह बहादुर अन्तर्राष्ट्रीय फाउंडेशन द्वारा 9 जून 2015 से 9 जून 2016 तक मनाए जाने वाले 300 साला शहीदी दिवस की युगों-युग अटल श्री हजूर साहिब नान्देड़ की यात्रा पर जा रहे जत्थे के मुखी स. कृष्ण कुमार बाबा-प्रधान, डॉ. एस. पी.सिंह ओबराय-मैनेजिंग ट्रस्टी-सरबद दा भला मैनेजिंग ट्रस्ट-यू.एस.ए., स. जसवंत सिंह छापा-सरपरस्त, स. तलविन्दर सिंह घुमाण-पैट्रन फाउंडेशन यू.एस.ए., स. हरबंत सिंह दिओल-प्रधान कैनेडा के सम्मान समारोह में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उपस्थित समूह संगतों से विचार सांझे करते हुए कहा।

स. एस.पी.एस. ओबराय ने इस महान अभियान में समूह संगतों को अपने तन-मन-धन से इस अभियान को

सारे संसार में जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। फाउंडेशन के प्रधान श्री कृष्ण कुमार बावा ने संगतों को विश्वास दिलाया कि बंदा सिंह बहादुर का इतिहास आने वाली पीढ़ियों के लिए चानन-मीनार का काम करेगा। देश-विदेश में 21 समागम और सेमीनार-गुरदास नंगल गढ़ी से दिल्ली-महरौली तक विशाल नगर कीर्तन सजाया जाएगा। 9 जून 2016 को दिल्ली में विशाल समागम का आयोजन करते हुए 9 विश्व प्रसिद्ध महानुभावों का सन्मान किया जाएगा। महान यौद्धा बाबा बंदा सिंह बहादुर ग्रंथ रिलिज किया जाएगा।

प्रेषक : **डॉ. अवतार सिंह शास्त्री**
राष्ट्रीय मीडिया एवं सम्पर्क प्रमुख
राष्ट्रीय सिख संगत

.....पृष्ठ 17 का शेष

पड़ रही है। उन्होंने राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में संगठन की ताकत के लिए पहल कर उवअमउमदज चलाने पर बल दिया ताकि गऊ वंश रक्षण के लिए प्रभावी कानून व नितियां बन सके। समाज व कार्यकर्ताओं को स्वार्थों की तिलांजली देकर अभावग्रस्त किसानों को जागरूक करना होगा जैविक खेती के लिए। विहिप के पंजाब प्रान्त के कार्यकारी अध्यक्ष सन्तोष गुप्ता, उपाध्यक्ष अरूण खन्ना, इन्द्रदेव शर्मा, रविन्द्र अग्रवाल, योगेश धीर, कपिल बजाज, विजय धीर, राजपुरोहित उपाध्याय, रमन शर्मा, रितेश मनू, सोमेश शर्मा, दविन्द्र अरोड़ा, सौरभ सून, नवीन शौरी, एस.के. शास्त्री भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. शैलेन्द्र सिंह (डण्क्ण डमकपबपदम) ने भी 'गऊ माँ' की महिमा व उपयोगिता का उल्लेख कर कार्यकर्ताओं से योजना बनाकर गऊ वंश के पालन व रक्षण का अनुरोध किया। बैठक के दौरान 'गौ विज्ञान' परीक्षा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इसे - 'गौ सेवा, संवर्धन एवं रक्षण' का आधार बताया गया और यही समाज का लक्ष्य निर्धारित करने में भी सहायक हो सकती है।

'गाय नहीं कटने देगें - देश नहीं बंटने देगे' उद्घोष के साथ दो द्विवसीय बैठक का पूर्णतामन्त्र के साथ समापन हुआ।

प्रेषक-**श्रीराष्ट्र प्रकाशजी**
इन्द्रप्रस्थ, क्षेत्रीय गौरक्षा प्रमुख

वृक्षारोपण पर हरियाणा सरकार का सही नजरिया

-स्मिता

पिछले कई वर्षों से मानसून के आगमन के साथ सरकारी-गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण कार्यकिया जाता रहा है।

गैर-सरकारी संस्थाओं का ध्यान हाँलाकि देशज वृक्षों यानि पीपल, बड़, जामुन, आम, नीम, महुआ के पेड़ लगाने पर रहा है। उन संस्थाओं के पास सीमित संसाधन हैं परन्तु सरकारी वृक्षारोपण में करोड़ों करोड़ रुपये खर्च किये जाते हैं। सरकारी विभाग विद्यालयों, पथ परिवहन विभाग और सरकारी जमीन की उपलब्धता द्वारा इस कार्यक्रम को तीव्र गति प्रदान करती है। यह भी एक सत्य है कि कुल लगाए गए पौधों का 20% ही जीवित या पूर्ण रूप से वृक्ष बन पाते हैं। दूसरा एक कटु सत्य यह है कि चाहे वन विभाग हो या लोक निर्माण विभाग जिला प्रशासन हो, सभी इसे सफल बनाने में हरे पत्तों वाले पेड़ को बढ़ावा देते हैं यानि ऐसे पौधे जो कम से कम पानी में जीवित रहें, फलदार न हो, देखने में खूब पत्ते वाले हों, एक समान दिखे। ये पेड़ देशज हों या विदेशी इसका भी उन्हें ज्ञान नही है और यह हमारे देश की जैव-विविधता के लिएकितना नुकसानदेह है इसकी परवाह किये बिना कई वर्षों के लगातार गलत पद्धति के वृक्षारोपण ने हमारे हिमालय से लेकर झारखंड बंगाल तक यूकेलिप्टस (सफेदा) के पेड़, चीर के पेड़ हिमालय के पूरे क्षेत्र में लगा दिये।

शहरी क्षेत्रों में फायकस की विदेशी प्रजातियों, छतनार के रूप वाले कई पेड़ों को खूबसूरत बताकर सड़कों के किनारे, पार्कों में, विद्यालय, सरकारी दफ्तरों में लगाए गये। यह सारा कार्य देशज वृक्षों यानि पीपल, बड़, पाकड़, नीम, अर्जुन, महुआ, आम, जामुन की अनदेखी करके किया गया। अपने देश में अपनी मिट्टी के ये पौधे सरकारी नीतियों में तिरस्कृत हो गये।

बहुत सारे पर्यावरणविदों ने इस घनघोर उपेक्षा पर आवाज उठायी। वैज्ञानिक प्रयोंगो से साबित किया कि सफेदा, विदेशी कीकड़ ने जलश्रोत और जमीन का कितना बड़ा नुकसान किया है, हिमालय में भूस्खल बढ़ने का बड़ा कारण चीर और यूकिलिप्टस द्वारा वहाँ की स्थानीय, पर्वतीय पौधों का समूल नाश करना है। इससे बढ़कर भारत की जैव-विविधता को भारी नुकसान हुआ है, देशज वृक्षों के अभाव में वानरों को भोजन की तलाश में शहरों में आना पड़ गया है, जानवर जो पत्तों पर आश्रित थे वे कम हो गये है और उन पर आश्रित बाघ तेंदूएँ जैसे जंगली जीव आज भोजन की तलाश में गाँवों एवं तहसीलों में आ रहें हैं। गलत पौधों के चयन ने पूरे वृक्षारापेण का उद्देश्य खराब कर दिया है, एक पूरे वैज्ञानिक जीवन चक्र जिनमें पशु, पक्षी, मनुष्य, वृक्ष जंजीर की कड़ी के रूप में एक दूसरे से जुड़े है उनकी वह कड़ी टूट गयी है।

इतना सच जानने के बावजूद जब उत्तराखंड के मुख्यमंत्री यह कहते है कि गंगा के किनारे के इलाके के 400 एकड़ में चीड़ का वृक्ष राज्य सरकार नहीं हटा सकती क्योंकि चीड़ के पेड़ों को हटाकर उत्तराखंड या हिमालयी मौसम, जमीन के अनुकूल वृक्षों के रोपण के लिए उनके पास पैसा नहीं है तो हँसी भी आती है, दुख भी होता है।

क्या कोई मान सकता है कि इन 400 एकड़ में फँसे चीड़ के पेड़ों की लकड़ियों का मूल्य वृक्षारोपण पर खर्च होने वाले पैसों से कम होगा? क्या इस प्रकार की गैर-जिम्मेदारी हिमालयी-जैव विविधता को संरक्षित तथा उत्तराखंड को भूस्खलन से बचा सकती है?

इसी पृष्ठभूमि में जब भारत में विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा वृक्षारोपण का खूब जोरशोर अभियान चलाने का विज्ञापन देखते हैं तो आशा की एक तेज किरण हमें हरियाणा सरकार के विज्ञापन में जनता से किये गये वृक्षारोपण के आग्रह में दिखी। सामान्यतया हरेक सरकारी विज्ञापन जनता से वृक्ष लगाने का आग्रह करता है पर किसी में वृक्षों के चयन तथा प्रकार नही बताए जाते यानि जो हरा दिखे वह वृक्ष है और जनता उसे लगाए, विद्यार्थी लगाए पर उनको यह भी नहीं पता कि उन्हें अपने प्रदेश के कौन से अनुकूल वृक्ष लगाने चाहिये। यह एक ऐसा सवाल है जिसको हल किये बिना सही वृक्षारोपण, यानि जैव-विविधता पूर्ण वृक्षारोपण सफल नहीं हो सकता।

यही मूलभूत अंतर हरियाणा सरकार द्वारा जारी विज्ञापन तथा अन्य राज्यों के विज्ञापनों में देखने को मिला।

हरियाणा सरकार के विज्ञापन में स्पष्ट रूप से **तुलसी, जामुन, तूत, नीम, बड़, पीपल** के नाम दिये गये थे। जनता से इन देशज वृक्षों को लगाने की अपील की गई थी। वृक्षारोपण में किसानों को प्रोत्साहित करने के कई कार्यक्रम भी दिये गये थे। मूल तत्व देशज वृक्ष परिभाषित करना था जनता को बताना था जो एक बहुत ही अच्छी शुरूआत है। कई पर्यावरणविदों ने इस प्रयास की बहुत प्रशंसा की है। वास्तव में माननीय मनोहरलाल खट्टरजी मुख्यमंत्री तथा कैप्टन अभिमन्यु वन मंत्री का यह सरकारी प्रयास एक बहुत ही प्रशंसनीय कदम है।

विगत कई वर्षों से विश्व हिन्दू परिषद विदेशी वृक्षों को देशज वृक्षों की कीमत पर लगाए जाने का विरोध करता रहा है, अतः इस स्वर्ण जयंती वर्ष पर इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद द्वारा भारतीय वृक्षों के महत्त्व को जनजागरण द्वारा जो फैलाया गया वह अब आम जनता को चाहे वह शहरी क्षेत्र हो, तहसील हो या ग्रामीण क्षेत्र हो सब तरफ प्रसारित हो रहा है। अगर भारतीय वृक्षों के महत्त्व को हरियाणा सरकार ने समझ लिया है तो कुछ ही वर्षों में उम्मीद है कि अन्य राज्य सरकारें भी भारतीय जैव-विविधता और वृक्षों का महत्त्व समझेगी। कुछ वर्षों बाद जब भारतीय वृक्षों का वृक्षारोपण फल, फूल और लोगों के बीच समृद्धि, भूजल का स्तर ऊपर लाएगा तभी विश्व हिन्दू परिषद को पूर्ण सफल होने का अहसस होगा तब तक यह कार्यक्रम ''पर्यावरण रक्षणार्थ वृक्षारोपण कार्यक्रम-भारतीय वृक्षों का महत्त्व'' लगातार चलाना और जनजागरण बनाए रखना होगा।

E-mail : smitapinky1975@gmail.com

भारत माता मंदिर में मनाई तुलसी जयंती

हिसार 22 अगस्त। स्थानीय भारत माता मंदिर में शनिवार को तुलसी जयंती मनाई गई। इस अवसर पर भारत माता मंदिर महिला समिति की महिलाओं ने रामचरित मानस की चौपाईयों का वाचन किया। तुलसी जयंती पर भारत माता मंदिर के साधना केन्द्र के लिए 11 पंखों का दान किया। इस अवसर पर मंदिर के महामंत्री विजय शर्मा उपस्थित रहे। भारत माता मंदिर के अर्चक आचार्य संतोष शास्त्री ने गोस्वामी तुलसीदास के जीवन व उनकी रचनाओं के बारें में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि तुलसीदास का जन्म राजापुर उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिला के अंतर्गत स्थित आत्माराम दुबे नाम के एक प्रतिष्ठित सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार में संवत् 1554 के श्रावण मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी तिथि के दिन अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म हुआ। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार शिशु बारह महीने तक माँ के गर्भ में रहने के कारण अत्यधिक हृष्ट-पुष्ट था और उसके मुख में दाँत दिखायी दे रहे थे। जन्म लेने के साथ ही उसने राम नाम का उच्चारण किया जिससे उसका नाम रामबोला पड़ गया। उनके जन्म के दूसरे ही दिन माँ का निधन हो गया। पिता ने किसी और अनिष्ट से बचने के लिये बालक को चुनियाँ नाम की एक दासी को सौंप दिया और स्वयं विरक्त हो गये। संतोष शास्त्री ने

तुलसी राम से तुलीदास तक के प्रसंग सुनाए।

उन्होंने बताया कि संवत्त 1680 में श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवार को तुलसीदास जी ने श्रीराम कहते हुए अपना शरीर परित्याग किया। उस अवसर पर विहिप की प्रांतीय महिला प्रमुख सुनीता शर्मा, लता सिंगल, श्रीमती मनोरमा गुप्ता, टेरेसा जैन, स्वदेश गुप्ता, संतोष तायल, सुमेश तंवर, बिमला कथूरिया, इंदू गोयल, रमेश पासी, कमलेश गोयल, नीलम गोयल, सीमा गोयल, उमा राजगडीया, दीपिका गुप्ता, रितुगुप्ता, शीला चौधरी, अनीता गोयल, मीरा गोयल, सुमन अग्रवाल, सीमा सोनी, मंदिर के अर्चक आचार्य रामकिशोर शुक्ल आदि ने भाग लिया। ❑

प्राकृतिक चिकित्सा में गाय के गोबर का विभिन्न उपयोग

-वैद्य ओम प्रकाश द्विवेदी, आचार्य

आयुर्वेद चिकित्सा ग्रंथों में गाय, गोमय, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि की महिमा का वर्णन अनेक स्थानों पर प्राप्त होता है। अब तो विदेशों में भी इस पर अनेक अनुसंधान किये जा रहे हैं। भारत में गौ को अपने विभिन्न अमृतमय गुणों के कारण अभी तक 'माता' की संज्ञा दी जाती रही है किन्तु अब गोवंश पतन के कगार पर है ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हमारी भावी पीढ़ियों को गौ के दर्शन दुर्लभ हो जाएंगे। गाय मात्र इतिहास की चीज बनकर रह जाएगी। जबकि विदेशी लोग इसके अद्‌भुत गुणों के कारण तेजी से अपना रहे हैं। एक खोज में इटली के डॉक्टरों ने यहाँ तक सलाह दी है कि टी.बी. सेनिटोरियम को गाय के गोबर से लेपा जाए वहाँ गोबर रखने से उसकी गंध वायु के द्वारा वहाँ प्रसारित होती है तो उससे टी.बी. के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। जबकि भारत के ऋषि मुनियों ने इसे पहले ही अच्छी तरह समझ लिया था इसीलिए भारतीय संस्कृति में जब कभी किसी के घर में कोई आयोजन या पवित्र कार्य होता था तो सर्वप्रथम गोमय से सारे घर को लीपा जाता था तभी वह घर शुद्ध माना जाता था। प्रसव के बाद गौ के पाँच द्रव्य जिसे पंचगव्य कहा जाता है को पिलाने की परंपरा आज भी है इससे प्रसूता के गर्भस्थ संक्रामक जीवाणु तत्काल नष्ट हो जाते हैं। गाय की महिमा अनंत है लेख के कलेवर वृद्धि और विषयांतर के भय से उसका विस्तृत वर्णन करना यहाँ उपयुक्त नहीं होगा।

हम यहाँ गोमय के औषधीय गुणों पर प्रकाश डालना चाहते हैं अस्तु! यह बात भी भली भाँति समझ लेना चाहिये कि कोई अन्य पशु का गोबर अशुद्ध हो सकता है गाय का गोबर विभिन्न औषधीय गुणों के कारण त्याज्य नहीं है वह शुद्ध और पवित्र है धारणीय है। आप अपने भाव को सकारात्मक रखें।

गाय के गोबर से बने हुये उपलों (कंडों) के धुओं से प्रदूषण नहीं फैलता है बल्कि वायु मण्डल का प्रदूषण दूर होता है इसके धुएं से वायुमंडल के विषाक्त कीटाणु मर जाते हैं। वहाँ का वातावरण स्वास्थ्यप्रद बन जाता है।

इसी प्रकार वैज्ञानिकों का मत है कि जिस घर या छत को गोबर से लीपा जाता है उस पर बिजली नहीं गिरती।

यदि हम एक गाय (देशी) पालते हैं तो उससे हमें प्रतिवर्ष लगभग 3500 किलो गोबर, 2000 लीटर गोमूत्र प्राप्त होता है। जिससे यदि हम चाहें तो 4500 घन फीट बायोगैस, 80 टन सेंद्रिय खाद तथा 2000 लीटर सेंद्रिय कीटनाशक प्राप्त कर सकते हैं और इस खाद को कृषि में प्रयोग कर प्रति एकड़ लगभग 30 से 40 प्रतिशत तक फसल के उत्पादन को भी बढ़ा सकते हैं।

गोबर का औषधीय उपयोग

- **एक खाज-खुजली पर जादू जैसा प्रभावः**- थोड़ा सा गोमय को सुखा लें फिर उसे जलाकर भस्म तैयार कर लें। अब गाय के मक्खन को 100 बार पानी में धो लें (पानी से धोने की एक विशेष विधि है-किसी कांसे की थाली में लगभग 100 ग्राम मक्खन डालें और उसमें पानी का छींटा मारे फिर उसे हाथ से मलें जब वह पानी मक्खन से अलग हो जाय तब फिर छींटा मारें और फिर मथे या मले यही क्रम 100 बार करें और उस पानी को हर बार बाहर डालते जाएँ आयुर्वेदिक शब्दों में इसे 'शतधौत' क्रिया कहते हैं) अब इसमें 25 ग्राम गोबर भस्म मिलाकर रख लें। शरीर पर जहाँ भी खाज, खुजली हो इसे लगायें तुरन्त आराम मिलेगा।
- **फोड़े-फुंसी या रक्त दोषः**- शरीर पर जब छोटी-मोटी फुंसियाँ या रक्त दोष के कारण फोड़े आदि निकल आते हैं तो उससे काफी परेशानी और दर्द होता है कभी-कभी विभिन्न औषधियों के सेवन करने के बावजूद वे ठीक नहीं होते ऐसी स्थिति में ताजे गोबर का रस लगभग 10 ग्राम सुबह, शाम सेवन करने के लाभ होता है। (रस निकालने के लिए एक सूती बारिक कपड़े में ताजे गोबर की पोटली जैसी बनाकर निचोड़ें तो सहज ही रस निकल आता है) साथ ही फोड़े फुंसियों को गोमूत्र से धोयें और गोबर का लेप भी करें।
- **रतौंधी और आँखों की लालिमा मेंः**- गोबर के ताजे

रस को निकाल कर प्रतिदिन सुबह शाम दो-दो बूंद दोनों आँखों में डालें। इससे दृष्टि दोष ठीक हो जाता है।

- **अंजनिहारी (आँखो की फुंसी):**- कभी न कभी हर व्यक्ति की आँखों की पलकों के अंदर फुंसी निकल आती है उससे व्यक्ति को बड़ी असुविधा और तकलीफ होती है ऐसी स्थिति में गाय के ताजे गोमूत्र की दो-दो बूंद दिन में लगभग दो-तीन बार डालने से या आँखों की पलकों पर लेप करने मात्र से तत्काल लाभ मिलता है।
- **असहनीय एड़ी का दर्द:**-जब एड़ी में किसी भी कारण से दर्द रहता हो और चलने-फिरने में कष्ट होता हो तो ऐसी स्थिति में प्रतिदिन जहाँ गाय बाँधी जाती हो या गौशाला में सूर्योदय से पूर्व जाएं और गाय के ताजे गोबर में पैर (एड़ी) रखकर कुछ देर लगभग 10 मिनट खड़े रहें, यदि यह नियम दिन में दो बार सुबह, शाम करें और भी अच्छा रहेगा लेकिन गाय का गोबर बिल्कुल ताजा होना चाहिए (और गर्म होना चाहिए)।
- गाय की उपलों की गर्म भस्म एड़ी पर मलने से भी दर्द बन्द हो जाता है। यह प्रक्रिया दिन में दो-तीन बार करें।
- **उदर कृमि:**- लगभग चार चम्मच गोमूत्र सुबह शाम सेवन करें और नाभि पर गाय का ताजा गोबर का लेप कर दें और घंटे बाद लेप उतार दें, पेट के कीड़े कुछ ही दिनों में मल के साथ निकल जायेंगे।
- **बर्र, मच्छर, मक्खी, मकड़ी आदि के काटने पर:**- जब कोई छुद्र जन्तु बर्र आदि काट लेते हैं तो उस स्थान पर सूजन हो जाती है, फफोले पड़ जाते हैं, जलन होती है और असहनीय वेदना से कभी-कभी ज्वर भी हो जाता है। ध्यान रहे जब कोई ऐसा जन्तु काट ले तो तत्काल गाय के गोबर को उस स्थान पर अच्छी तरह मल कर उसका मोटा लेप लगा दें, दिन में लगभग 2-3 बार ऐसा करने से विषाणु नष्ट हो जाते हैं और आराम मिल जाता है।
- **भयंकर जलोदर रोग में:**-जलोदर रोग के नाम से ही यह ज्ञात हो जाता है कि इस रोग में पेट में पानी भर जाने का संकेत है, इस रोग में थोड़ी सी लापरवाही जानलेवा सिद्ध हो सकती है। ऐसी स्थिति में रोगी को धूप में लिटाकर उसके पेट पर गाय का ताजा गोबर का मोटा लेप करना चाहिए दिन रात में लगभग 3-4 बार। साथ ही 50 ग्राम गोमूत्र में 2 ग्रा. यवक्षार मिलकार आवश्यकतानुसार दिन में 2-3 बार पिलायें। रोगी को केवल गोदुग्ध पर रखें। आशातीत लाभ होता है।
- **योनि कण्डु रोग में:**- गोबर का रस निकालकर उससे योनि का प्रक्षालन करें फिर डेटोल भावित जल से धो दें, यह क्रम कुछ दिन करने से योनि की खुजली व फंगस आदि रोग ठीक हो जाते हैं।
- **भयंकरसर्पदंश में:**-भयंकर विषधर के काट लेने पर रोगी का बच पाना कठिन हो जाता है उसके विष के प्रभाव से व्यक्ति को बार-बार मूर्च्छा आती है। ऐसी स्थिति में रक्त मोक्षणादि कर्म करने के बाद गोबर का रस, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि और गोमूत्र समान भाग लेकर थोड़ा गुनगुना करके थोड़ा-थोड़ा 10-10 मिनट के अंतराल पर पिलाते रहें। साथ ही रोगी के सिर (ब्रह्मरंध) के बाल इस्तुरे से बनवा उतार) दें पिर उस पर ताजा गोबर का लेप कर देना चाहिए। लेप मोटा होना चाहिए। इस कार शुक्ति-युक्त प्रयास करने से रोगी की निश्चित ही प्राणरक्षा होती है।
- **चेचक मसूरिका रोग में:**- चेचक के रोगी को जहाँ लिटायें वहाँ गाय के गोबर से पूरे कमरों को लिपवा दें और उपलों का धूम दें तथा गोमूत्र पान करायें, इससे रोगी को शीघ्र आराम मिलता है। चेचक या मसूरिका की तीव्रावस्था में गोबर के रस में कपूर मिलाकर लगाने से शीतलता मिलती है और रोगी को शीघ्र ही इस रोग से छुटकारा मिल जाता है।
- **शीतपित्त:**- शीतपित्त रोग में छोटे-छोटे धब्बेनुमा छाले पड़ जाते हैं तेज खुजली से बेचैनी होती है ऐसी स्थिति में गोबर रस में थोड़ा सा कपूर मिलाकर पूरे शरीर पर लगायें तत्काल आराम मिलेगा। यदि गोबर रस में कपूर और गेरू मिलाकर लेप करें तो और भी अच्छा रहेगा। त्वचा रोगों में 'मरिचादि तैल' भी प्रयोग किया जा सकता है। इसमें भी गोबर रस मिला होता है।

मठ मन्दिर प्रमुख-जिला इन्द्रप्रस्थ, वि.हि.प. दिल्ली

भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं उदासीन पंथ के प्रवर्तक- बाबा श्रीचंद जी महाराज

-प्रो. लालामोहर उपाध्याय
(महामंडलेश्वर स्वामी ईश्वर शास्त्री)

भारतीय संस्कृति की विशालता का परिचय देते हुए समस्त मानवता को भाइचारे का उपदेश देने वाले उदासीन सम्प्रदाय के जन्मदाता परमपूज्य बाबा श्रीचंद जी महाराज का जन्म संवत् 1551 (1494 ई.) भाद्र सुदी नवमी (शुक्ल पक्ष) शुक्रवार के दिन माता सुलछनी की कोख से सुल्तानपुर (पंजाब) में हुआ था। ये सिख पंथ के प्रवर्तक श्री गुरुनानकदेव महाराज के बड़े सुपुत्र थे।

ऐसा कहा जाता है कि पापों की भार से दबी धरती माता ने भोले भंडारी शंकर के चरणों में अपनी करुण गाथा सुनायी तो स्वयं महादेव शंकर ने जगत जलंदा राखिले अपनी कृपा धारि के उद्घोषक गुरुनानकदेव जी महाराज के घर भगवान श्रीचंद के रूप में अवतरित हुए। प्रारम्भ में ही सिर पर जटा, तन पर विभूति और कानों में कुंडल मुद्रा धारण करने के कारण लोग इस विलक्षण बालक को भगवान शंकर का इवतार मानने लगे थे।

श्री के.एम. मुंशी ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक 'दी लाइफ ऑफ बाबा श्रीचंद साहिब' में लिखा है कि विद्वान ज्योतिषियों ने इस बालक की जन्म कुंडली देखकर महापुरूष होने की भविष्यवाणी भी कर दी थी। पंडित द्वारा श्रीचंद नामकरण पर दादा कालुजी काफी प्रसन्न थे। इस नामकरण की सटीकता पर पंडित जी को दादा द्वारा काफी दान-दक्षिणा देकर विदाई की गई थी। सही बात तो यह है कि आज भी उदासीन सम्प्रदाय के लोग बाबा श्रीचंद जी महाराज को गवान शंकर का साक्षात् अवतार मानते हैं। तवारिख गुरु खालसा (ज्ञानी लाल सिंह कृत तृतीय संस्करण, पृ.-36) में भी उपुर्यक्त तथ्य की पुष्टि मिलती है। कहा जाता है बहन बेबे नानकी द्वारा बाबा श्रीचंद जी के जन्म की खबर सुनकर श्री गुरु नानकदेव ने कहा था-

सुन बेबेजी बात बताऊँ, हृदय बी बात तुझे समझाऊँ।
यह ईश्वर शिवजी भंडारी, हमरी प्रीत आया गिरधारी।
यह विशेष उत्तम बढ़यारा, इसका पंथ चले जग सारा।

होनहार वीरवान के होत चिकने पात को चरितार्थ करने वाले बाबा श्रीचंद जी महाराज की बाल लीला भी अपरम्पार है। एक बार पाँच वर्ष की आयु में बालक श्रीचंद जी अपने द्वार पर आये भिखारी को जब एक मुट्ठी चने उसकी झोली में देने लगे तो भिखारी आश्चर्यचकित हो गया कि इस बालक ने गलती से चने के स्थान पर मोती डाल दिया है। भिखारी जब मोती वापस करने लगा तो बालक श्रीचंद ने कहा-बाबाजी ले जाओ फिर कभी और जगह भीख मांगने की अब जरुरत नहीं पड़ेगी। सच तो यह है कि प्रारम्भ से ही इस बालक को आध्यात्मिक रुचि थी। इतना ही नहीं शेर के बच्चों के दांत गिनना, हिंसक जन्तुओं के साथ खेलना, गले में सांपों का हार पहनना आदि बालक श्रीचंद की सहज प्रक्रिया थी। इतना ही नहीं कश्मीर में वर्षों रहकर वेद-वेदान्तों का गहन अध्ययन करने में बाबा श्रीचंद जी महाराज ने जो अभिरुचि दिखायी वह अपने आप में स्तुत्य है। महामंडलेश्वर स्वामी ईश्वर शास्त्री जी के अनुसार बालक श्रीचंद ने कश्मीरी पंडित पुरुषोत्तम कौल तथा श्री विशम्भर देव मुनि जी से दीक्षा ली। ऐसा कहा जाता है कि एक बार बाबा गोरखनाथ ने इनसे पूछा कि आपका पंथ क्या है? तो भगवान श्रीचंद जी महाराज ने डंके की चेट पर कहा कि हमारा तो अखंड, अचल , निर्बैर एवं अद्वैत धर्म है।

सिख धर्म की गुरु परम्परा में गुरु गद्दी पर विराजमान होने वाले गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव, गुरु हर गोविन्द साहिब जी से भी बाबा श्रीचंद जी महाराज जी के सम्बन्ध आजीवन काफी मधुर रहे। बाबा श्रीचंद जी गुरु अंगददेव जी को गुनानक जी का स्वरूप जानते हुए ही (सरुप जी) कहकर सम्बोधित करते थे। एक बार जब बाबा श्रीचंद जी महाराज अमृतसर साहिब गए तो गुरु रामदास जी ने उनके चरणों को अपनी दाढ़ी

से झाड़कर हार्दिक स्वागत करते हुए ऊँचे आसन पर बैठाया, प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया, जिसकी चर्चा सूरज प्रकाश रास अंश-14 में अंकित है।

ऊँच स्थान श्रीचंद बिठाये।
आप निम्न कर तरै तकाये।
श्रीचंद बोल कत्कालु।
करत प्रदखना प्रेम दयालु।

(सूरज प्रकाश रास 2 अंश 14)

एक बार गुरु अर्जुनदेव जी बाबा श्रीचंद जी के पास जाकर अपनी दाढ़ी से उनके चरण झाड़े, पाँच सौ रुपये के साथ त्रिविध प्रकार के वस्त्र भेंट किए। श्रीचंद प्रकाश अध्याय-60 दोहा 63 में इसकी पूरी चर्चा हुई है। गुरु अर्जुनदेव ने बाबा श्रीचंद जी को आसा दीवार का कीर्तन सुनाने के बाद सुखमनी साहिब को 16 अष्ट पदियाँ भी सुनायी पर बाबा श्रीचंद ने इसे 24 अष्टपदियों में लिखने की सलाह दी। इतना ही नहीं, गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्पादन की बात सुनकर बाबा जी काफी खुश हुए एवं इसे महत्त्वपूर्ण कहते हुए कहा कि इसमें गुरु नानकदेव जी सहायता करेंगे। गुरुवाणी संग्रह कार्य में बाबा श्रीचंद जी का सहयोगभी सराहनीय रहा है। ऐसी चर्चा है कि मीरी पीरी के मालिक गुरु हरगोबिन्द साहिब ने अपनी साहिबजादों के साथ बाबा श्रीचंद जी के पास जाकर पाँच सौ रुपये विविध वस्त्र एवं एक घोड़ा भेंट किए थे। इस तथ्य की चर्चा सूरज प्रकाश रास-7 अंश-9 में इस प्रकार हुई है :-

उतर तुरंग ते ले सुत चारी।
श्रीचंद दर से तफतारी।
चरण कमल पर बंदन कीन।
पुनकर जोर समुख आसीन।

(सूरज प्रकाश रास-7 अंश-9)

लगभग डेढ़ सौ वर्ष इस संसार में रहते हुए बाबा श्रीचंद जी महाराज ने जो सम्मान प्राप्त किया उसका आने वाली पीढ़ी कभी भी नहीं भुला सकती है। इतना ही नहीं बाबा श्रीचंद जी महाराज ने हजारों मील पैदल चलकर देश-विदेश के कोने-कोने में जाकर प्रभु नाम सिमरण, चरित्र विकास, एकता अखंडता, विश्वबन्धुत्व की शिक्षा दी। इनकी गुरुनानक सहसनामा अचना अनुपम है।

आज की विषम परिस्थिति में श्रीचंद सरुप धरियों कलि आए क्षर ताये मार्ग पर चलकर ही हम भारतीय संस्कृति, धर्म, सथ्यता की रक्षा कर सकते हैं। इतना ही नहीं इनके बारे में कहा जाता है:-

श्री गुरु नानक देव दे घर आया शिव सरुप भगवान
माता सुलखनी ने जाया बाबा श्रीचंद निरबान।
।।चेतो नगरी तारो ग्राम।। अलग पुरख का सिमरो नाम।।

उनका स्पष्ट विचार था कि धर्म का उद्देश्य मानव की पाश्विक वृत्तियों को सुसंस्कृत एव परिष्कृत करके मनुष्य को आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न बनाना है। उनका कहना था कि **प्रेम से बढ़कर कोई धर्म नहीं तथा हिंसा से बढ़कर कोई पाप नहीं।** सभी जीवों में एक ही ईश्वर का वास होता हैं अत: सबसे प्रेम करो। इसीलिए तो आपने संत समाज को नगर-नगर, गाँव-गाँव भ्रमण कर नई चेतना जागृत करने का आह्वान किया। ❑

इस्लाम में गौसंदेश

हमारी ऊँची हिम्मत और साफ नियत का तकाजा है कि हमारी हुकूमत में गौकशी की रस्म बिल्कुल न रहे, जो कोई भी गौकशी करेगा उसके हाथ और पाँव की उंगलियाँ काट दी जायेगी।

-बादशाह अकबर का फरमान

'ना तो कुरआन और ना ही अरब की प्रथा गौ की कुरबानी का समर्थन करती है।

-हकीम अजमल खाँ

'गाय को चारा खिलाने के बाद खुद खाना खाओ'
'मुझे मेरी श्यामा गाय का दूध और सब्जियाँ बहुत भाती हैं।

-बाबा बैंग्लौरी मस्तान 'निमाड़वाले'

मंदिर और सत्संग धर्म के आधार

-ओम प्रकाश सिंहल

नई दिल्ली। सितम्बर 7, 2015। विश्व हिन्दू परिषद की स्वर्ण जयन्ति वर्ष के समापन कार्यक्रम के रूप में दिल्ली के कोने-कोने में सत्संगों के आयोजन किए गए। सप्ताह भर तक चले इन भव्य आयोजनों में हिन्दू समाज के हर वर्ग की सहभागिता के साथ अनेक संतों, विद्वानों और हिन्दू संगठनों के पदाधिकारियों ने संबोधित भी किया। आज पूर्वी दिल्ली में आयोजित एक सत्संग को संबोधित करते हुए विहिप के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सिंहल ने कहा कि मन्दिर और सत्संग समाज व्यवस्था, विश्व शांति और धर्म के आधार स्तंभ हैं। सत्संग को घर-घर पहुंचाना और हर घर का मंदिर जाना हिन्दू समाज के प्रत्येक व्यक्ति का पुनीत कर्तव्य है।

विश्व हिन्दू परिषद की स्वर्ण जयन्ति के समापन अवसर पर देश व्यापी अभियान के तहत मनाए गए **सत्संग सप्ताह** के दौरान दिल्ली के कोने-कोने में भी सत्संगों की धूम रही। राजधानी के लगभग 300 स्थानों पर आयोजित विविध सत्संगों में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी राघवानन्द, विहिप की स्वर्ण जयन्ति समारोह समिति के प्रान्त महा मंत्री श्री गुरुदीन प्रसाद रुस्तगी, विहिप के क्षेत्रेय संगठन मंत्री श्री करुणा प्रकाश, दिल्ली के संरक्षक श्री अशोक कुमार व श्रीमती संजना चौधरी, सह मंत्री श्री राम पाल सिंह यादव, बजरंग दल दिल्ली के संयोजक श्री नीरज दोनेरिया, मातृशक्ति संयोजिका श्रीमती संध्या शर्मा तथा दुर्गा वाहिनी संयोजिका कु कुशुम सहित अनेक संत महात्माओं तथा गणमान्य लोगों ने सम्बोधित भी किया।

पूर्वी दिल्ली के लक्ष्मी नगर, मयूर विहार, शहादरा, यमुना विहार, अशिक नगर मीत नगर व खिचड़ीपुर, पश्चिमी दिल्ली के उत्तम नगर, जनकपुरी, नांगलोई, उत्तरी दिल्ली के जहांगीर पुरी, भलस्वा, प्रहलादपुर व नरेला दक्षिणी दिल्ली के संत नगर, बदरपुर, अम्बेडकर नगर, रामकृष्णपुरम व कालका जी तथा दिल्ली केन्द्र चांदनी चौक, झन्डेवालान, पहाड़ गंज, पटेल नगर, त्रिनगर व कमला नगर इत्यादि अनेक स्थानों पर आयोजित इन कार्यक्रमों में हजारों धर्मावलम्वियों, स्थानीय जन प्रतिनिधियों व समाज जीवन से जुड़े मूर्धन्य लोगों ने भाग लिया।

प्रेषक : विनोद बंसल
प्रवक्ता, विहिप दिल्ली

इस्लाम में गौसंदेश

'तुम्हारे फायदे के लिए गाय का दूध है, क्योंकि यह और इसका मक्खन मुफीद दवाई है अलबत्ता इसके गोश्त में बीमारी है।'

'गाय के दूध से इलाज करो कि अल्लाह ने इसमें शिफा रखी है क्योंकि यह हर किस्म के दरख्तों पर चरती हैं।'

-हदीसे तिबरानी, तिब्बे नब्वी सल्ल और जदीद साइंस डॉ. खालिद गजनवी, पृष्ठ 320

'गोकशी से परहेज रखना, ऐसा करने से ही तुम हिन्दुस्तानियों का दिल जीत सकते हो।'

-बाबर का अपने बेटे हुमायूँ को खत

तीन आतंकी संगठनों की पनाहगार तमिलनाडु?

-कैलाश गौड़

दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में आईएस, माओवादी और तमिल टाइगर की तिकड़ी को फलने-फूलने के लिए मैदान मिल गया प्रतीत होता है। सुरखा सूत्रों के अनुसार आतंकवादियों को तमिलनाडु सर्वाधिक सुरक्षित स्थान लग रहा है। वेल्लोर के निकट झम्बुर में गत माह हुए सांप्रदायिक उपद्रव के दौरान सर्वाधिक हमला पुलिस पर किया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि यह कार्य आतंकी गुटों का है। उपद्रव के दौरान न केवल अनेक वाहन जला दिये गये, बल्कि ढाई-तीन हजार की भीड़ ने पुलिस थाने को भी लूट लिया।

उपद्रव के लिए शमील अहमद की मृत्यु को बहाना बनाया गया जो कि शादीशुदा पवित्रा नामक महिला को भगा ले गया था। उसके पति की शिकायत पर शमील को बंदी बना लिया गया। पूछताछ के बाद उसे छोड़ दिया गया जो बाद में बीमार पड़ गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया यहाँ उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद ही उपद्रव शुरु हो गए। पुलिस ने 118 लोगों को गिरफ्तार किया। आतकी संगठन तमिल मनिला मक्काली काची के विधायक असलम पाशा ने भीड़ को पुलिस के खिलाफ भड़काया जिसकी परिणीति हिंसक उपद्रव में हुई। साथ ही सउदी अरब की सहायता से चल रहे तौहीद जमात के संगठन ने क्षेत्र में काफी घुसपैठ कर ली है।

उधर लिट्टे के पूर्व सदस्य के. कृष्ण कुमार को पुलिस ने गिरफ्तार कर उसके रामनाथपुरम् स्थित घर से सादनाइट जहर के 75 कैप्सूल, 300 ग्राम सादनाइड, चार सेट विश्व स्थिति बताने वरले तथा 7 मोबाइल फोन बरामद किये गये। गुप्तचर सूचना के अनुसार तौहीद जमात सोशल मीडिया के माध्यम से गैर मुस्लिमों के प्रति घृणा फैलाने का काम भी किया जा रहा है। युवा मुस्लिम इस्लामिक स्टेट के प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

यद्यपि त्रिपुरा में हाल ही 5 माओवादी गिरफ्तार किये गये तथापि उनका नेता अबूबकर सिद्दीकी तमिलनाडु में रहकर भी वहाँ की पुलिस के हाथ नहीं लगा है। उस पर वर्ष 2013-14 में संघ से संबंद्ध 10-12 कार्यकर्ताओं की हत्या का आरोप है।

विश्वस्तरीय होगी आंध्र की नई राजधानी अमरावती

सिंगापुर सरकार ने आंध्रप्रदेश की प्रस्तावित नई राजधानी अमरावती का मास्टर प्लान मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को प्रस्तुत कर दिया है। इसमें सरकारी कार्यालयों के लिए 45 मंजिले दो भवनों के अलावा तीन लाख आवासीय परिसर बनाने की योजना है। कुल 16.9 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में नई राजधानी का निर्माण होगा। इसमें अगले 20 वर्षों में 35 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा जबकि 2050 तक 56 लाख को रोजगार देने का लक्ष्य है।

अमरावती में सचिवालय, विधानसभा, राजभवन, मंत्री बंगले और कर्मचारी आवासों के अलावा कृष्णा नदी के आसपास पर्यटन स्थल विकसित करने का प्रस्ताव भी है। नई राजधानी के निर्माण में भागीदार बनने की इच्छा सिंगापुर सरकार ने भी व्यक्त की है। अधिकारियों का दल तुर्कमेनिस्तान और कजाकिस्तान का दौरा कर वहाँ की राजधानियों का अध्ययन करेगी। प्रधानमंत्री की सलाह पर यह कदम उठाया जाएगा।

बंदरगाह निर्माण 1 नवंबर से: केरल के गहरे समुद्र में बंदरगाह बनाने का कार्य राज्य के स्थापना दिवस एक नवमबर से शुरू होगा। करीब 7525 करोड़ रु. लागत की यह योजना अडानी पोर्ट एवं सेज को मिली है जो सरकार तथा निजी सहयोग से योजना क्रियान्वित करेगा। अगले माह इस योजना पर हस्ताक्षर किये जाएंगे। केरल के विभागीय मंत्री के. बाबू के अनुसार 74 साल बाद अब बंदरगाह निर्माण का रास्ता साफ हुआ है।-सी.एन.एफ.

❑